भोलवा भोलाराम बनिस



श्यामलाल चतुर्वेदी

भोलवा भोलाराम बनिस

(कहानी संग्रह)

भोलवा भोलाराम बनिस

(कहानी संग्रह)

श्यामलाल चतुर्वेदी

प्रकाशक

भारतेन्दु साहित्य समिति

बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

प्रकाशक :

भारतेन्दु साहित्य समिति

२६ विद्या नगर बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

लेखक :

श्यामलाल चतुर्वेदी

प्रथम संस्करण	: 1995
द्वितीय संस्करण	: 1996
तृतीय संस्करण	: 1998
चतुर्थ संस्करण	: 2002

मूल्य : 30.00

लेजर कम्पोजिंग :

यूनिक. पंचमुखी हनुमान मंदिर के पास

दुर्ग. छत्तीसगढ़. फोन : 0788–328605

मुद्रक :

श्री प्रकाशन

ए. 14 आदर्श नगर, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

फोन (0788) 326234

अटल बिहारी बाजपेई और श्यामलाल चतुर्वेदी



भोलवा भोलाराम बनिस

(कहानी संग्रह)

चतुर्वेदी जी का
लेखक के रूप में
अभिनन्दन!

अटल बिहारी वाजपेयी
19.9.97

सम्मतियां

पद्मश्री पं. रामनारायण उपाध्याय, खण्डवा

आपकी पुस्तक ''भोलवा भोलाराम बनिस'' पढ़कर मुग्ध रह गया जैसे सौंधे दूध का स्वाद होता है वैसे लोक भाषा एवं जन-जीवन और जमीन से जुड़ी होने के कारण अपना अलग स्वाद देती हैं उनमें मिट्टी की सोंधी सुगंध, फसलों का आनंद और जीवन की धड़कन सुनी जा सकती है। लोक को जानने पहचानने और जागृत करने का प्रयास ही लोक साहित्य के अध्ययन का मूल उद्देश्य है। इस पवित्र उद्देश्य के लिए अपना जीवन होम कर छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य को हिन्दी साहित्य के समक्ष खड़ा करने वाले मूक साधक भाई चतुर्वेदी का योगदान अविस्मरणीय है।

डा. मन्नूलाल यदु संरक्षक अस्मिता संगठन रायपुर

''भोलवा भोलाराम बनिस'' कहानी संग्रह को जो पढ़कर समझ ले वही छत्तीसगढ़िया है। छत्तीसगढ़िया की परीक्षा के लिए यह सवोत्तम कृति है। छत्तीसगढ़ में प्रकाशित यह कहानी संग्रह अद्वितीय है। चतुर्वेदी जी शत प्रतिशत ठेठ ग्रामीण भाषा का ही प्रयोग करते है, ऐसे बंधे मुहावरे और कहावतों के प्रयोग अब सुनने को नहीं मिलता। यह पुस्तक शुध्द छत्तीसगढ़ी रचना की दृष्टि से अमर कृति है। माटी की पूर्ण सुगंधि इसमें व्याप्त है।

पं. सरयूकांत झा शिक्षाविद् रायपुर

''भोलवा भोलाराम बनिस'' एक सशक्त कथा संग्रह है। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण परिवेश की आन बान देखनी हो तो इसकी नौ कहानियों में से किसी एक को भी आधार रुप में प्रस्तुत किया जा सकता है प्रस्तुति की विशेषता इतना आकर्षक है कि पाठक इसमें डूब जाता है। लेखक के पास शब्द भंडार का अभाव नहीं। भाषा को गौरवान्वित करने वाले सशक्त और समर्थ मुहावरों का अजश्र स्त्रोत है, विनोदपूर्ण अभिव्यक्ति शैली है। नये ढंग से प्रस्तुत करने का अभिनव रंग है। अकूत अनुभव है और है छत्तीसगढ़ी के प्रति प्रगाढ़ अपनत्व।

श्री हरि ठाकुर साहित्य साधक रायपुर

''भोलवा भोलाराम बनिस'' कहानी संग्रह को पढ़ने से मेरे विश्वास को बल मिला है कि छत्तीसगढ़ी तो साहित्य की भाषा है। उसमें श्रेष्ठ साहित्य के सृजन की पूरी क्षमता है। पुस्तक में ग्राम्य जीवन की सरलता और सहजता तो है ही भाषा के प्रति गम्भीरता और निष्ठा श्लाघनीय है। भाषा पर अदभुत अधिकार है। चतुर्वेदी जी ठेठ ग्रामीण लहजा और मुहावरेदार भाषा के धनी हैं। मुंशी प्रेमचंद के पश्चात हिन्दी कथा साहित्य से गांव लगभग गायब हो गये। छत्तीसगढ़ी कथा साहित्य के केन्द्र में गांव आज भी स्थित है यह हमारा सौभाग्य है। चतुर्वेदी जी का यह कहानी संकलन इस तथ्य की पुष्टि करता है। इस संकलन की कहानियों में छत्तीसगढ़ के गांव की गरिमा को बड़ी सहजता के साथ उजागर किया गया है।

प्रकाशकीय

भारतेन्दु साहित्य समिति ने श्री श्यामलाल चतुर्वेदी की छत्तीसगढ़ी कविताओं का संग्रह 'पर्रा भर लाई' का प्रकाशन किया था। कहानी, एकांकी, निबंध तथा महान व्यक्तियों का जीवन चरित्र ऐसे अनेक विधाओं में जो रचनाएँ उन्होने लिखी हैं – उसको पुस्तकाकार रुप दिया जाय तो सात–आठ ग्रंथ बन सकते हैं।

प्रस्तुत कहानी संग्रह ''भोलवा भोलाराम बनिस'' में श्री चतुर्वेदी की नौ कहानियों को संगृहित किया गया है, चतुर्वेदी द्वारा प्रणीत ये कहानियाँ समय–समय पर आकाशवाणी रायपुर से प्रसारित होती रहीं है। ये कहानियाँ जहाँ सहज सरल एवं ग्रामीण परिवेश का चित्रण करती हैं वही उनमें रोचकता और उत्सुकता का भी तत्व महत्वपूर्ण है। वास्तव में चतुर्वेदी जी एक आंचलिक कथाकार हैं। इस कहानी संग्रह में भी अंचल के रीति–रिवाज तीज–त्यौहार, लोक कथा को प्रचलित छत्तीसगढ़ी भाषा के द्वारा उन्होंने अपनी कहानियों को सजीवता प्रदान की है। छत्तीसगढ़ी भाषा के मुहावरों कहावतों के प्रयोग के कारण उसमें आंचलिक वातावरण का चित्रण निखर उठा है।

छत्तीसगढ़ी गद्य कम प्रकाशित हुए हैं। कहानी विधा की पुस्तकें तो उँगलियों में गिने जा सकते हैं। अत: चतुर्वेदी जी की ये कहानियाँ बेजोड़ हैं। और मौलिकता लिये हुए हैं।

चतुर्वेदी जी की सभी कहानियों का कथानक छोटा है। वास्तविक जीवन

की घटनाओं से वे कथावस्तु लेते हैं। कथावस्तु सहज है जिसके कारण वे अच्छी कहानी की पूरी सम्भावनाओं से परिपूर्ण हैं।

चतुर्वेदी जी की सभी कहानियाँ चरित्र–चित्रण प्रधान कहानियाँ हैं। कहानी के पात्र काल्पनिक नहीं वरन् उनके अपने परिवेश के हैं जिन्हें कल्पना के पुट लाकर प्रस्तुत किया गया है। इन कहानी पात्रों में छोटे बाबू, बहोरन, सुकवारा, भोलाराम, भाना आदि पाठक के मन को झकझोरते हैं। आकर्षित करते हैं। ''पतिबरता कहानी में उनका सूक्ष्म निरीक्षण देखिये – ''बम्हनिन अति सुग्घर रहिस। गोरी नारी, जउन देखय तउन बिना मिलकी मारे देखते रहि जाय। साँचा म ढारे कस ओकर हाथ पाँव। केंवची खीरा कस ओकर पिंडरी, आमा चानी कस गाल, माथा म टुक्क लाल सेन्दुर।'' उसी तरह सतवंतिन सुकवारा की देह–यष्टि का चित्रण देखिये – ''सुकवारा के खीरा बीजी दाँत हर हाँसत खानी चमकय तब लगय जइसे करिया लुगरा म तोपाये कड़ी वाला करधन के एक लर हर दिखीस हे। उसी तरह जंगो का चित्रण का क्या कहना ?'' नाव तो ओकर भाना रहिस फेर जइसे रहिस सुभाव तइसे चलगे नाँव। कुछू अन्नेत देखय सुनय तहाँ जंग हो जाय, तव जमें वोला जंगो कहे लागिन।''

श्यामलाल चतुर्वेदी की कहानियों के संवाद अत्यंत स्वाभाविक संक्षिप्त और चुटीले हैं।

व्यक्ति अपने परिवेश से प्रभावित होता है तथा उसके प्रत्येक क्रियाकलाप पर वातावरण का प्रभाव तो पड़ता ही है। चतुर्वेदी जी ने अपनी कहानियों

में वातावरण तथा परिवेश को प्रमुख स्थान दिया है। ग्रामीण परिवेश के चित्रण का आनंद लीजिए – ''दाई हर छोटे बाबू के संगी मनला कुछू काँही खाजी देवय चना, मुर्रा, लड्डुवा, लायचीदाना, तब कभू भुरभुंग एकोदिन चिला, अंगाकर, कभू होरा।'' तथा एक दूसरा दृश्य देखिये –''पन्द्रा महीना दिन मा घर ला छूही म खुंटीया डारै, लिपाई पोताई, बहराई के मारे परछी ओसारी हर अइसे दिखय के ऐही म एक परोसा भात खा लेतेंव।''

प्रेमचंद्र का कथन है कि 'कहानी का मजा कहने में है' और कहने का तरीका हर आदमी का अलग अलग होता है। श्यामलाल चतुर्वेदी का छत्तीसगढ़ी भाषा पर अपना अधिकार है। भाषा की चुश्ती, उपर्युक्त मुहावरों का सटीक प्रयोग, गहरी अनुभूति यही सब उनकी वर्णन शैली का निर्माण करते हैं। मुहावरेदार, लच्छेदार भाषा का लालित्य द्रष्टव्य है – ''मिरगिन बरोबर मेछरावत हे। मसरपोटी माते हे बांड़ी मन ला बिन नाथ के बइला कस ढिल्ला। न बन जाय बर न बाध धरे बर। मया हर लेवना कस टघले लागिस। तइहा के बात ल बइहा लेगिस। आन ल सिखौना दय अपने बइठ रवनिया लय। गोड़ के पथरा ल मुड़ म कचार तिस। थूके थूक मा लड्डुवा बांधना। जउन बरथे तउन बुताये। फरथे। तउन झरथे। तपते तउन खपथे। दही के भोरहा म कपसा ल लइ खावन। लइका जाँघ म पिसाब कर डारथे त जाँघ ल कोनो थोरे काटथें ? बिहनहा के रसता भुलाये हर बेरा बुड़तहा बहुर के घर आ गय। दूध के दूध पानी के पानी होगे। कच्चा लकड़ी कस आगी गुंगवात रथे।'' श्यामलाल चतुर्वेदी मूलत: कवि हैं। इसलिये उनकी भाषा काव्यात्मक है और मौलिकता से परिपूर्ण है।

मूलत: कहानियाँ उद्देश्यमूलक हुआ करती हैं। चतुर्वेदी जी की कहानियों में छिपा हुआ उद्देश्य महत्वपूर्ण है। मनोरंजन के साथ–साथ उन्होंने सजीव पात्रों के माध्यम से अपने भोगे हुए यथार्थ को प्रकट किया है। उनका व्यक्तित्व बड़ा सबल और प्रभावपूर्ण तो है ही। मयारुक मनमतिया कहानी में परिवार नियोजन हेतु अप्रत्यक्ष रुप से प्रेरित किया है – ''केचो पेचो लइका होवाहा तब पीछू पछताहा। आजकल तो कमती लइका बच्चा रहय तेकर कई किसम के उजोग निकरे हे। तउन ला जान समझ ला।'' सतवंतिन सुकवारा कहानी में दार्शनिकता का सोद्देश्य आनंद लीजिए। – ''जउन हर ये धरती म जनम लिही, तउन हर एक न एक दिन माटी म मिलबेच करही। ओकर संग म न तो नता गोता जाही अऊन धन दोगानी हर काम परही। ये ही तो संसार आय। जियतभर आदमी कतका उधामत करथे फेर मरे के बेर सब जुच्छा के जुच्छा। संग म जाथे बस जस अउ अपजस।''

इस तरह श्यामलाल चतुर्वेदी की कहानियों का सृजन सोद्देश्य हुआ है जिसमें उनका ठोस व्यक्तित्व झलकता है। 'जीवन की व्याख्या' करने में वे सफल है। छत्तीसगढ़ी कथा साहित्य में उनकी ये कहानियाँ मील का पत्थर सिध्द होगी।

रामनारायण शुक्ल

अध्यक्ष

भारतेन्दु साहित्य समिति

२६, विद्यानगर, बिलासपुर

पूर्विका

कहानी मानव–जीवन की कहानी है, तथ्य भी कथ्य भी, जिज्ञासा भी और उसका समाधान भी। प्रागैतिहासिक युग से लेकर आज तक कहानी का विकास तीव्र गति से हो रहा है। कहानी का संवेदन और उसकी प्रतिपाद्य सीमा–अत्यंत विस्तृत है। कहानी स्थूल से सूक्ष्म की ओर, जड़ से चेतन की ओर, पशु से मनुष्य की ओर मानव से मानव–मन की ओर तथा मानव–मन से अंतर्मन तक आ चुकी है। पहले कथाकार वर्णन करता था, फिर चित्रण करने लगा और फिर विश्लेषण प्रस्तुत करने लगा। आज मनोविश्लेषण से भी आगे नयी कहानी युगबोध के अनुरुप वस्तु एवं शिल्प का संश्लेषण प्रस्तुत कर रही है।

इतिहास और अतीत के स्वर्णिम पृष्ठों संवेदनाओं से लेकर आधुनिक युग की समस्त समस्याएँ कहानी के वर्ण्य विषय में आती हैं। चंपा नगरी के आकाशदीप से लेकर मध्यकालीन मुगल काल में 'दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी' के आसुओं में रोती हुई बेगमों से लेकर आधुनिक काल के कफन–चोर, किसान मजदूर, कोसो का घटवान, मिस पालस, मलबे का मालिक, पुरुष के भाग्य तक की संवेदनाएँ इस कला की वर्ण्य–वस्तु हैं। व्यक्तित्व की प्रतिष्ठान आधुनिक कहानी की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

आंचलिक कहानियों के नाम से अभिहित ये ग्राम–कथाएँ सहानुभूति, आत्मीयता तथा तादात्म्य से परिपूर्ण हैं। नये अंचल में नये धरातल पर

नयी भाषा तथा संवेदना के साथ ये कहानियाँ लिखी गयी हैं।

आंचलिक कथाकार जीवन में गहरे उतर कर उस जीवन की समस्याओं और उसके संपूर्ण व्यक्तित्व को उभारते हैं – एक दर्शक की हैसियत से नहीं, एक भोक्ता की हैसियत से, उन्हीं में घुल–मिलकर। इसीलिए उनकी कथा की आत्मा में एक आक्रोश है, एक विक्षोभ है, एक व्यथा है। उनमें अनुभूति की वास्तविकता का ताप है, उनमें जीवन की वास्तविक प्रक्रिया की स्वरलिपियाँ हैं। इन कहानियों में उद्दाम जिजीविषा है, तथा गहरी मानवीयता है – जन जीवन के गहरे आत्मीय संस्पर्श और उस जीवन की व्याकुल अकुलाहट है।

श्यामलाल चतुर्वेदी की ये आंचलिक कथाएँ एक स्तर पर कहानियाँ हैं, किस्सागोई के नये संस्कार के साथ, दूसरे स्तर पर ये कहानियाँ कम, चित्र अधिक हैं और तीसरे स्तर पर उग्र मधुर स्वरों में बँधे जीवन–राग। इनमें कथा की परिपाटी है – रोचकता की दृष्टि से, किन्तु कहानी की सी अन्विति और एकता नहीं, अनुभवों का बिखराव और प्रभाव–बिम्बों की एक कतार जिसमें कहानी के सारे कला–तत्त्व भी हैं, इनमें मिलती है। इनमें लोकगीत लोककथा का स्वर तथा अकृत्रिम भाषा के माध्यम से ध्वनि चित्र मिलते हैं। जन भाषा लोकरंग में रंजित अंचल–विशेष की रीति–नीति आचार–विचार, व्यवहार–विश्वास को व्यक्त करती है।

चतुर्वेदी जी छत्तीसगढ़ी के कवि तथा कलाकार हैं। यह छत्तीसगढ़ी अर्धमागधी की दुहिता एवं अवधी बघेली की सहोदरा है। भाषाविद् इसे

पूर्वी हिन्दी परिवार के अंतर्गत एक विभाषा के रुप में ही स्वीकार करते हैं। आज इस अंचल के भाषाविद् इसे भाषा के रुप में ही प्रस्तुत करने के लिए परिकर बध्द हैं। यह अपनी मातृभाषा के प्रति सहज अनुराग है, स्वाभाविक प्रीति है।

छत्तीसगढ़ी भाषा हयी–हयवश के राजाओं के परिसर में जन्मी, पली और फिर संपूर्ण छत्तीसगढ़ में फैल गयी। आज इस भाषा के बोलने वालों की संख्या लगभग दो करोड़ है। द्वि कोटि नर–नारियों की भाषा अकिंचन क्यों ? वास्तव में छत्तीसगढ़ी जब काकली से स्वरित होती है, तो उसका स्वर्णिम रुप पंडुकी की पुकार में प्रतिध्वनित होता है। उसमें जो सुरभि है, वह अमराई में बौराई आम्रमंजरी की तीखी–तुर्रा गंध है और स्वाद में घनवारा में पकते कड़ाह से निकलने वाले खट–मधुर गुरुतुर गुड़ की मधुरता है, ध्वन्यात्मकता में तो बकुल के षड़ज से लेकर कोकिल के पंचम तक – सऽऽब समाहित हो जाते हैं, तथा चित्रात्मकता में तो सतरंगी इंद्रधनु की आभा है।

चतुर्वेदी जी के पात्र तो बोलते ही नहीं, हँसते रोते भी हैं, हँसाते रुलाते भी हैं। उनकी कलम की मसि में डूबकर ये पात्र सजीव है, सशक्त हैं – रतनपुरहिन तो सर्वथा सज्ञान सजीव है। अब कथा पढ़ें और कथाकार को पहचानें –

डॉ. पालेश्वर प्रसाद शर्मा

अगहन पुन्नी 2051

विद्यानगर, बिलासपुर

विषय सूची

17

रतनपुरहिन सियानिन

घाट घटवँधा, गली खोर परछी चौंरा, जउन लँग कोलबिल कइय्या गलबजार कस माते रथे तिहां जमों जान डारथें के ये लंग अवस के रतनपुरहिन सियानिन होबेच करही।

डहर चलती लइकनमन जउने लंग देखतिन तिहां दउंड़ के तिर मं आके गोहनाये लगतिन–ये बुढ़ीदाई। एको ठन किस्सा कहानी कहि देना ओ! ये डोकरी ये ममादाई! आंय ओ! एक ठन नान मुन कुछु कौह न औ! कभू तो डोकरी हांस भरय अउ कभू कभू कऊवा के भंसेड़ तिस–भड़ुवा भेट्टा होवा बेरा चिन्हें न कुबेरा जउने लंग पाथे घुर्री घंसे लागथे। ये का ये दाई ? कइसन ये लइकन सत्ती नाचत हें। धन्न हे धन्न हे।आजकाल के लइकन कइसन उदबिदहा हो गईन चेट चेट चेट चेट करत हैं।रस्दा नई रेंगे देत हें।

बेरा बुड़े ले आबो तब सुनाबे ? डोकरी हांस के कहितिस ह हो आहा रे आहा। कत्था सुनिहा अउ खजेना घलाव खाहा। फेर तो लइकन कुलके लगतिन। पांव परत हौ, बुढ़ी दाई के कहाई म चिहुर परे लगतिस।

तलाव नँदिया जातिस तव पतोधिया मन चउज मढ़ातिन। कोनो गुड़री ल भिंजो देतिन, हंउली ल आने कती मढ़ातिन। लुगरा ल झींक देतिन। भई तो गै फेर का पूछना हे ? कहितिस – मोटियारी टूरी होवा। दुल्हा घर

जाहा अउ ठेंगे पिटान खाहा तब तुंहर ये करकरी हर जाही। अभी मइके के चाउर ल माड़ी मोर के दूदी तिन तिन घौं चोंगलाय के खावत हावा तभे मिरगिन बरोबर मेंछरावत हावा। जमो चेटचेटाई सटक जाही छिनार हो। मसरमोटी माते हे बांड़ी मन ला।

घाट भर के जमो नहवइय्या सुआरी मन हांस भरँय। हांसी मसखरी के कुंहाहल म गझिन हो जावै। रतनपुरहिन के गारी हर जमो ला कान के बारी कस लागय तेकरे बर ओला उसटँइय्या लेहे बिना कोनो के पेट के पानी नइ पचय।

रतनपुरहिन हर सेउक पंडित के दूसर बिहाई होके आये रहिस। सिअनहा के सुआरी होये के सेतिर, गांव भर के बड़का नता हो गईस। जादा उम्मर के मन देरानी बहुरिया हो गय रहिन। सियान मन बतावें जब रतनपुरहिन हर पठौनी होके आइस तब गांव भर मा देखनी हो गय रहिस। गहना गोटान म नदिया बइला कस लदायेढार तिलरी नांगमोरी बहुंटा ककनी, बनवरिया, सरजावाला नथ, पटिया, कमरपट्‌टा तोड़ा पैरी जतका बेर छन्नक छन्नक बाजत रेंगतिस देखनी हो जातिस। गोरी नारी एक बूंद पानी के नहवाऊ बिना मिलकी मारे देखत रहि जावैं। सियानिन होये म देखे ले लगय, के ये हर अपन उम्मर म कइसना सुघ्घर रहिस होही।

बछर दसक ऐंहवाती रहे पाइस तिहां जुच्छां हांथ होगे। अब तो आऊ कोनो छें कइय्या नई रहिगे ओइसने जनम के गोठ कहारिन, फेर अब तो

आऊ उल्ला बिन नाथ के बइला कस ढिल्ला छुछिंद कुछु के संसो नहीं। न बन जाये बर न बाघ धरेबर। सियानिन के आघू ले कोनो चुप्पे नहकतिन तब ओझिया के दू बात गोठिआये बिन नइ रहितिस। गांव बस्ती म कोनो घर के मरनी हरनी, बरबिहाव छठ्टीबरही दुख सुख के कुछू काम होतिस, सियानिन ला पहुंची जाना रहय। बलाव देहे बर कोनो कभू भुला जातिन तभो सवांगे हबर के भले झंझेट लेतिस बद्दी दे लेतिस।

निचट निखुरखी छिन मा कोनो ल मसखरी मढ़ाके खल खल खल खल हांसे लगतिस अउ कोनो के दुख देखके तर तर आंसू ढारे लगतिस। लगय जइसे कनिहा म हांसी अउ रोवासी दुनू ल एक क कती खोंचे हे। संझा जुआर तेल नून बिसाये बनिया दुकान जातिस तव भंइसा मुंधियार के घर लहुटतिस। घर म रहितिस तव कोनो न कोनो बइठेच रहितिन। नान नान लइकन बर चना, मुर्रा, लाई, बिही तिल के लड़ुवा, बोइर कहत हौं न कुछू न कुछू राखेच रइतिस। कहय–राम के चिराई राम के खेत। खाले चिरइय्या भर भर पेट। जमो जिनिस भगवान के आय ओकरे जिनिस अउ ओकरे बनाये आदमी। जियत भर खाना अउ खवाना। हांस लेवा गोठिया लेवा। ये चोला हर पानी भरे खाल आय। का ठिकाना ये कर ? पानी के फोटका तो आय कोन जानत हे कब फुट जाही ?

सांझ होतिस तहां पारा के लइकन डुलियाये लगँय। आवा रे भड़ुवा रांड़ी होवा कइके उन ला हॉसत हॉसत बइठारतिस। फेर खाई खजेना देके

तिहां फेर किस्सा कहिनी के गुढ़वा ला पुरुत पुरुत उसेलतिस। सुनइय्या मन अब्बक हो जावैं कतका किस्सा जनउला गीद जमोला कइसे ये डोकरी सुरता राखे हावै ? होय न होय ये कर कंठ म सरसती बइठे होही। बिना भुलाये टप टपउहन कहि डारथे। डुंड़ी रक्सिन, पैली पैला, बेंदरा कोलिहा, अंड़हा कमिया, लंगटा बाम्हन बिघवा बघवा, सरहू तेली, राजारानी, सतबहिनिया, कतका कतका ला मुंहअखरा बिना, अटके भुलाये धड़धड़उहन कहि देथे। रोज के ओकर ऐही बुता बने हे।

सुरुज नरायेन के गोलवा चक्का उत्ती ले निकलथे, बुड़ती म ललिया के बुड़ जाथे। फेर बिहान होतेच ओही धर्रा ल धर लेथे। जस तस ओकर आना जाना चलत हे तस तस आदमी जम राजा के लकठा कती तिरियावत जाथे। मनसे मन गम नई पावैं। अपन उम्मर अउ आन के धन दोगानी हर अघात अकन दिखथे। तलाव के मँगरा कस काल हर घटबँधा तिर, चुपे चुप चप्प ले धरे बर तिरियावत रथे, गम नई मिलय, दिन जात बेरा नइ लागय।

एक दिन मनटोरा के बड़े बेटी के मंझिला छोकरा हर अपन ममा दाई घर आइस। लइकाई के पइधे तो आय पहुंचगे रतनपुरहिन ममा दाई घर। पयलगी करके कहिस मोला चिन्हत हस ममादाई ? सियासिन हर गोड़ मुड़ ले देखिस माथा ल गुंझिया के गुनिस फेर आकब नइ पाइस। बेटा तैं कोन अस रे ? देखे हंव कस लगत हे फेर चिन्हें नइ सकत हौं बेटा ? सियान पन म घियान हर धुंधिरिया जाथे रे। मै तोर दुलौरिन के बेटा औं बुढ़ी दाई

। अतका ल सुनतेच आंसू डबडबागे। मया हर लेवना कस टघलगे। चीन्ह डारेंव बेटा ! फेर तो पोटार के चूमा लेइस अउ कहिस–कस रे मनबोधी तैं तो घुरवा के खेंड़हा कस कइसन डंग–डंग ले बाढ़ गये हस रे ? नानकन रहे तव कइसन टें कहा सतनच्चा तिरबेंगला रहे। अब तोला कइसे चिन्हतेंव। रहिबे तोर बर पिढ़वा लानत हौं कहिके ओसारी ले धरा पछरा जाके लुगरा के अंचरा म पोंछत पोछत लान के मढ़ाइस। बइठ ले बेटा। घर के सबो झन के एकेक ठन हाल चाल पूछिस अउ मलिया म गुर पागे लाई लानके मढ़ाके कथे, ले पानी पीले। तूंमन तो सहर म रोज खोवा पेंड़ा खात होहा। हमर तो येही खाजा खुरमा ये। मनबोधी हर मुसुर मुसुर खात खात कथे–बुढ़ी दाई तोर सो कुछू कुछू बात पूछे बर आये हौ, बताहौं कइबे तव पूछिहौं। डोकरी दाई कथे–पूछ ले का पूछबे तौ ? तैं तो पुलुस दरोगा कस मोर परछो ले बे का रे ? पढ़े न गुने, करिया अक्क्षर भंइस बरोबर। मोला चकोरबे झन। सोझ सोझ पूछबे नइ तो फेर जानथस न मोला। बहिरी के मुठिया म देते दैहों। मन बोधी हांस भरिस।

बूढ़ी दाई। तइहा के दिन अउ अबके समे म तोला का का फरक लागथे ? मोला पूछत हस तब लिख ले तोर कागज म, तइहा के बात ल बइहा लेगे। काला काला कहौं रे बेटा ! पहिली गांव भर के रहइय्या चाहे कुछू जात पांत के रहैंय एक परवार असन सबके दुख सुख के संगी रहैय। आनके बूता ला जमो जुरके गोबरधन कस अलगा लेवैंय, अउ अब तो एक दूसर के चारी, अनदेखनई, झगरा झांसा, खीक्क होगे बेटा ! मनखे तो आघू ले बाढ़ गइन

फेर मन हर सांकुर होगे जइसना चपलाई के मारे खोल गली के हाल हे। कुछू कोनो घर होतिस तव बिन बांहटे कोनो नई खात रहिन अब तो सब अपखया, आंखी ओधा करके कलेचुप खावत हें। तइहा के मन पढ़े लिखे कमती रहिन फेर कढ़े जादा रहिन। न तो कोनो ल ठगा फुसाड़ी करँय न दगा दोगलाई करें। एक बोलिया, सोझुवा, अपन पसीना ओगार के कमावै अउ जउन जुरय तेला, मिल बहांट के खावैं, सन्तोषी रहिन। तोला बताहौं तव तैं पतियाबे नहीं। सोन चांदी के गहना रुपिया पैसा कुच्छू कोनो लंग गिरे परे पातिन तव खोज के गोसइय्या ल देवँय। चोर चंडाल हर अलग चिन्हा जावे अब तो कुछू गमे नइ मिलय। कोन का हे का कहत हे अउ का करत हे। आन ला सिखौना देय, अपन बइठ रवनिया लेय के जमाना आगे। जमे सिखोने बाला होगैं धरोइय्या पतरिया गइन। चटरहा लपरहा के अंकरी बेचावत हे चुप रहइय्या के चना घुनावत हे बाबू। जाने रे मन बोधी ! मन बोधी कहिस – दाई ! आघू ले कतको नावा नावा किसम के चीज होइस घलाव तो है। तोर मोटर चलत हे, गाड़ी दउंड़त हे, मंदरसा बनगे सड़क, अस्पताल, कतको सुभीता के बन्दोबस बनिस घलाव तो हय ? डोकरी हांस भरिस – कथे, कहे बर सब होगे फेर एको ठन म रंग ढ़ंग हावै ? कतका आघू रुख राई रहय अउ अब ? कहां नंदागे ? धड़ धड़उहन जउने पावत हें अपन बाप कस चीज कटाईच बुता करत हें। हेल्ला होगे चारों मुड़ा। रस्दा रेंगय्या छइंहावैं, चिरई चुरगुन ओकर फर ला खावैं। मउहा, चार जामुन, तेंदू आघू कतका खावन अउ अब नोहर होगे। सुन तो तैं मोर डोकरी के बात ला तोर सहर म जाके जमो झन ला बता दे, के रतनपुरहिन

बुढ़ीदाई हर कहे हे के – सत्ती झन नाचा। कतको कुदिहा तब भुंइये म आके जोगाहा। तपिहा तव खपिहा। ठग विद्या ल छोड़के अपन अपन चाल चलन ला सुधारा। पसीना गार के कमाई करा, अउ मिल बहांट के खावा। लपर लपर झन मारा। सोझ रसदा म रेंग के तुहूं सुख पावा अउ आनो ला सुख देवा। तुंहर सहर म रे बाबू। एक कती तो अपखया मन भँइसा भँइसिन कस मोटाये मसमोटइ के मारे मरत हे, तब दूसरी कती कतको झन दुनू जुवार भर पेट भात बासी बरोबर पाये बर तरसत हें। मनबोधी कहिस – कस बुढ़ीदाई तोला गद्दी म बइठार देबो तब तें कइसे राज चलाबे ? भेठ्हा नहि तो, मोही ला कुड़काये बर धरलिस। हमर अब का हे बेटा। नंदिया तिर के रुखुवा तो हावन। कब चल देबो का ठिकाना हे ? फेर अतका कइहौं रे – छल छिद्दर ल छोड़के, अपन मेहनत के कमाई ला खाके अउ खवाके, चार दिन के जिनगानी, ल बने बने जमो जीयँय आनो ल जिये देवँय। पानी ल मतलावैं झन, सफ्फा पानी पियँय आउ आनो ल पिये देवँय। हांसै अउ हँसवावैं, फेर फांसै झन फंसवावैं। झन रोवँय झन रोवावँय, अउ संसार के सिरजोइय्या भगवान के गुन ल गावँय अउ गवावँय। मनबोधी जा, अब तोहूला अगोरत होहीं घर म, एक ठोम्हा महूं अब राधिहौं पसाहौं।

✧✧✧

24

छोटे बाबू के बड़े बात

''दाई ददा हर जनम तो देथे,फेर करम ल नई देवय'' अइसे कहत सुनत सगर दिन ले आवत हन। ये बात ला भले कोनो मानँय के झन मानँय फेर छोटे बाबू ला देखके लगथे सोरा आना सही नइ होही। जउन दाई ददा अपन लइका बच्चा ल, नान पन ले बने बात के सिखौना देथे, तव ओही लइका मन, एक ल कोन कहय, सात पीढ़ी ल तार देथे। हां भाई। सिखौना देवइय्या ल, सवांगे बने बने काम करे बर परथे। तभे लइका मन धरथें। कोनो कइही, कहे भर ले बन जाही तव राम के नांव लेबे। जरी नई धरय। सुनइय्या हर घलाव कहइय्या के काम ल देख लेथे, तव पतियाथे, नई तो ओहू कथे– आन ला सिखौना दय अपन बइठ रवदिया लय।

हां ! तव मैं तो छोटे बाबू के बात बतावत रहेंव। ओकर गांव हर अच्छा बड़का छै आगर छै कोरी छान्ही के, पांच तारा बाला बड़हर बस्ती रहिस। असगई पसगई मा ओ गांव के सोर उड़य उहां के गौटिया के का बात ल कहिते ? हप्ता पन्द्रा दिन म कलकत्ता बम्बई के गजट ला डँकहार हर सवांगे अमरावै। बंधेजू घोड़ा अइसना, जेहर नानमुन झोरका ल एक कुदान म नहाक देतिस। दू घोड़ा बाला बग्गी गाड़ी तउन अलग, ओकर बइठक म कुंदाये खूरा के बड़े जनिक बाजवट तेमा गद्दा अउ उपर म बकुला पांखी कस उज्जर चद्दर दसे रहेय। चार छै ठन खुरसी माढ़े। गांव के मन ओला कछेरी कहँय। ओमेर ले नाहकत म पछीना छूट जाय। तरी मुड़ करके

सुटुर सुटुर रेंगइय्या हर रेंगतिस। बजनी पहनी पहिरइय्या हर ओलंग ले पनही ल हांथ म धरके नहाक तिस। पूंजी पसरा के का कहिते ? बड़े-बड़े ढाबा जेमा धन गोड़ा नांग देवंता रहय कहँय। कोनो कुछू काम बर जातिन तव गौंटिया के गोठ म हुंकारु भरेचबर परतिस। ओकर बात ल काटके कोन गोड़ के पथरा ल मुंड़ मा कचारतिस ? बाल बच्चा वाला आदमी ल, जमो कती ल देखके चले बर परथे न ?

कोनो गौंटिया के कछेरी म फिरियाद देइस तिहां भई तो गै। का होही न का, काकर कसूर निकलही, काकर कतका डांड़ बोड़ी परही ? काला गांव छोंड़े बर परही, कोन जानतिस ? जउन गौंटिया के मुह ले निकलगे, ओही हर नियाव ये। बइठे बर चार सियान अऊ बइठे रहय फेर उंकर काम 'ठउका कहे मालिक' अतके कहे के रहय गौंटिया के बात ल मानेच बर परै। चार झन घंसिया घलाव तो रहंय ओ लंग। नइ माने ले का होतिस तेहर कहे के नो है, गुने समझ के बात ये। गौंटिया के कतको मिलान के खेत मन, येई कछेरी के परभूता म बाढ़े रहिन। रमायेन पोथी के पढ़िय्या मन गुनँय, ओधा बेधा म कहंय का रावन के राज हर येही किसम के रहिस होही ?

तपथे तेहर एक दिन खपथे। ये बात अबंच नई जाय, फेर खप लेथे तभे सब पतियाथें जब तपथे तउन बेर म सब छइंहाये रथें लुकाय रथें, घिरमिटकी मारत कलेचुप दबके रथें। फेर हां। भगवान के जुड़ तरवार हे, खपोये के ओकर हर चलत रथे, भले ओहर दिखै नहीं।

छोटे बाबू हर येई गांव के एक बाम्हन छोकरा रहिस। लइकाई म ददा हर भगवान घर गय , तव महराजिन दाई हर, ददा दाई दूनू हो गइस। दाई का देबी दाई कहना चाही। लइका के मुंह ला देखत देखत दिन काटत भगवान ला बिनोवय। भगवान। मोर लइका के गोड़ मा कांटा झन गड़तिस अइसने कोनो के लइका के पेट के चारा ल कोनो झन लूठे सकतिन। असत्ती करइय्या के बंदरोबिनास करते उदेनाथ। छोटे बाबू तउन दाई के तोलगी ला एकोछिन नई छोंड़य। संगे म नहाबै, पूजा पाठ रमायेन पोथी पढ़य संगे म खावै पीवै। दाई हर भौंरा कीरा कस कुछू – कुछू बने बात के सिखौना देत रहय। कथा पुरान के बात निकालै तो बड़े बड़े अन्यायी मन के कइसे कइसे सत्यानास होइस, ऊंकर डीह म दिया बरइय्या नई रहिन ओ बात ल बतावै। प्रहलाद, कृष्ण, रामभगवान के बात ला तो घेरी भेरी करतिस अउ गोठे गोठ म गउंटिया के अनीत के बात ल निकाल के दुख करय छोटे बाबू ल लगय मोर दाई के मन मा जउन गौंटिया के अन्नेत ला जरी ले टूटे देखे के साध हे, तेला मैं हर करके देखाहौं। थोरक आऊ बाढ़ लेलंव। रखमखा जावै।

छोटे बाबू अपन जंवरिहा मन के एक ठन रमायेन मंडली बनाइस। रमायेन गावैं अऊ कभू कभू गौंटिया के लूटा पुदगा जबरा निबली के गोठ ला निकाल के उंकरो मन म बिरास के बीजा ल बोंवै '' ओमा पानी रितोवै। धीरे धीरे एक ठन अपन गुनान के लइकन मन के, गुट्ट

असन बनावत रहय। दाई हर छोटे बाबू के सबों संगी मन ला कुछू कांही खाजी देवय। चना मूर्रा, लड़ुवा, लायचीदाना तब कभू भुरमूंग एको दिन चीला, अंगाकर, कभू होरा। कुछू न कुछू देने च हे दाई ल। ओहर जानै लइकन मनबर खाई मीठ के माई पीठ ''।

झंझट उठे के कुछू मुड़ी पूछी नइ रहय। कब कोन बात ले का उठ जाही कोनो गम नई पावै। उठ तो गे एक दिन। छोटे बाबू ल, गौंटिया घर के बाम्हन भोजन के बलाव आइस। आने सब तो गइन फेर येहर नई गइस। गौंटिया पूछिस सबो झन आ गइन का गा ? एक झन छोड़ के जमो आइन हें – मालिक। कोने नई आये हे तेहर ? महराजिन दाई के छोटे बाबू हर। हूं ऽऽऽ गउंटिया के मुंह हर रिस के मारे ललिया गे। फेर मन ल मार के कहिस – जा, एक घौं अऊ बला दे। दूसर बलाव म छोटे बाबू आ गइस। गौंटिया कथे – कइसे नई आवत रहे पंडित ? देखा गउंटिया। तूं हमला गरीबहा ललहा समझ के बला था। तुंहर पहुना मन ओती खावत हें। ऐती बाम्हन भोजन हो ये नइये। फेर एक कती घिवहा सोंहारी तब येती तेलहा ल परोस था। दुआ भेदी करथा, तूंमन तेकरे बर नई आवत रहेंव। जउन जगा म मान गउन नई होवय, तिहां जाना नइ चाही। चाहे, उंहा सोन बरसय।

छोटक छोकरा के अतेक बड़ आदमी ल अइसना सफ्फा जुवाब। गोड़ के रिस हर तरुआ म चढ़गे। मिरचा खाये बरोबर आंखी ललियागे। जतका झन सुनिन अकबका गइन। मने मन मा संहराइन घलाव, चर्रा बर्रा बात

करे वाला बेटा, अइसने होना चाही। कोनो अनदेखना मन ला लगिस अब ये चटरहा टूरा के चटरही हर सटकही। सवा सेरिया के पाही परेहे।

छोटे बाबू हर घर म आके अपन दाई ल सब बिरदंत ला बताइस। दाई हर पोटार लिस बेटा ल। बने कहे बेटा दुआभेदी ल नई सहे। छोटे बाबू के उमाह हर दाई के पोटारे अउ सँहराये ले अंदरमा म नइ समाइस। आंखी हर चुहचुहागे रोवां गुरगुरागे।

बिहान भर ले गउंटिया के उपदरो चले लगिस। कभू इंकर खेत म गरूआ पेले हे, तव कभू कोला के साग भाजी के चोरी। गाड़ा के जुआड़ा एक दिन उछीन्द होगे। रात म अना चकरित छान्ही मँ ढेला पथरा। किसम किसम के हर्रवाय गौंटिया हर घंसिया मन ला काबर राखे हे ? अतको ल नई करहीं ? जब बंधेज करिय्या हर संवागे अन्नेत करत हे तव फेर का ठिकाना ? सब सुनंय, फेर कहे कोन सकतिस ?

गेंद ला तरी कती मारबे तव आऊ ऊपर कती उचक थे। तइसने छोटे बाबू के मन म अन्नेतहा के सब मसरमोटी ल सटकाये के गुनान हर भंभकत रहय, फेर, गुनय के अपन रस्ता घलाव हर नेत परवान होना चाही दाई के येहू सिखौना तो हय।

गांव म अपने अपन बीच म जगा जगा गोठिआवैं गउंटिया हर रांड़ी अनाथिन

के चीज बस के नकसान करते हे। ये बने बात नोहय। फेर बघवा के मुंह म कोन सौंहाही। करही तेहर भरही, तपही तेहर खपही कोनो कहंय बड़े बड़े गइन खमर छठ आइन रकम रकम के गोठ फेर सब के मन म छोटे बाबू कती सोग पीरा हर बाढ़त गइस।

महिना दू महिना के गये ले एक ठन नावा डमफान उठगे। तलाव पार के कुरिया म रहे तउन खोरी नवाइन बुढ़िया हर, गाड़ा रसन होइस तहां चटका पटका मर गे। आन जात ल बना ले हे रहिस तब सगा ले छुट्ट रहिस। डांड़ भात के डर मा परजातक मन दाग माटी कइसे करंय ये अलकर हे। गौटिया सो गइन तव कहिस – मेहत्तर सो फेंकवा देबो। महराजिन दाई के मन मा भारी दुक्ख होगे। एक अनाथिन नारी परानी के गती बिगड़त हे। ठउका दिन म ओकर हुकुम के हाजिर बेटा तउन गांव गये हे। कइसे नइ आवत हे भगवान ! मोर बेटा हर आ जातिस दुआरी म कुछू खुटका होवय तहां दउंड़ के देखय। ये येदे आतो गे। दाई ल सिसिआये देखके छोटे के जीव हर दक्क ले करिस। पूछे नइ पाइस बेटा हर। दाई हर कहते कहिस – बेटा ! खोरी हर परोदिन के मरके अपन कुरिया म परे हे। गंधावत हे रे। ओकर माटी गोंटी के कुछू उजोग कर देता बेटा ! गांव म एक ले एक तालेवन्त पोथी रमायेन के पढ़इया सुनइय्या बहंगर आदमी हावैं फेर एक रांड़ी अनाथिन के मुरदा ल माटी देहे कोनों के जांगर नइ चलत हे। जर जाय अइसन जितरभ ला।

तव तैहर ओकर लहांस म लुगरा ओढ़ाबे अऊ आरती करबे दाई ? ह हो मैं

सब करहूं। जा तो खंझा ल मढ़ावा। छोटे बाबू अपन संगी मन ला खंधोइस तव चार छोकरा मन लटपट निकलीन। तमासा देखइय्या रस्ता रस्ता म खड़े हैं। पहिली तो आधा सेर डामर गोली ल पीस के लहांस म भुरक दिहीन मुंह कान ल अपन बांधके दू ठन सूर ला खटिया तरी डार के फेर निकालीन। तिहां रामनाम सत्त हे कहत निकल गें। ओती महराजिन दाई कोसा धरी के बरहँथ्था लुगरा अउ दियाबंती धरे तियार अगोरत रहय। दुआरी म लान के उतार दिन तिहां महराजिन दाई हर लुगरा ल ओढ़ाइस, आरती करिस अऊ पउवा भर गुलाल ल छींच के असीस देइस। अतका ल देखिन तहां घरो घर ले आरती निकलगे। चार पांव नई जावै तहां फेर उतारे बर परै। देखा सिखी जमो महराजिन दाई के बोहात गंगा म हाथ धोये लागिन। भई तो गय माटी देवइय्या के रेर परगे ओकर गत गंगा सब होइस। महराजिन दाई जीजाबाई हर शिवाजी बना डारिस छोटे बाबू ल। ये करवंट्टी पथरा हर ओर केरवंट्टी लहुट गे। गौटिया के तपनी हर सूरज नरायेन कस बूड़गे अब पुन्नी के चन्दा के जुड़ अऊ जग जग ले अंजोर जमो के जीव जुड़ाये लगिस।

छोटे बाबू हर फेर तो पंडिताई पढ़िस चारों मुड़ा ओकर सोर होगे। गउंटिया हर गांव के आदमी मन ला मामला मुकदमा म कचेहरी चढ़ा देवै तव फेर ओकलात पास करिस। ले अब कइसे करबे ? बिन पैसा के मामला ल लड़य। धीरे-धीरे ओकर दंद फंद अपन आप सकलाये लगिस। जउन आदमी गौंटिया के आघू मा चिंव नइ करे सकंय तउन मन हांव ले करे

लगिन। काबर नइ करतिन ? पोठ्ट धरखन तो पा गये हैं। छोटे बाबू हर जइसे जइसे जस बाला होइस तस तस आऊ निचट नवे लगिस फरबाला पेंड़ कस। ओ गांव के असगई पसगई म अब्भो ले सोर हावै फेर घंसिया घोड़ा कछेरी बाला के सेतिर न ऽ ही अब तो छोटे बाबू पंडित वकील महाराज के सेतिर है। कोनो ओकर आघू म बड़ाई करथें तव कथे, मोर नहीं, मोर दाई के बड़ाई करौ मैं तो ओकर कठवा के पुतरी आंव। दाई हर अब नइये फेर ''हांथी बूलै गांवन गांव, जेकर हाथी तेकर नांव'' कस दाई के जस ला गोठिआये बिना नई रहय।

मोर किस्सा पूरगे, दार भात चूरगे।

32

बटोरन नऽही, बहोरन चाही

लगथे बात तइहा तइहा के आय। ओइसे बहुत दिन नई होये हे फेर जब दिन बेरा हर नहकत जाथे तब लागथे कतेक दिन होगे। अउ कहूं दुसंधा म पर जाता तव थोरक दिन हर घलाय पहार असन हो जाथे। बने बने म तो गमे नइ मिलय, के कइसे दिन पहा गइस। हां। तव ये गोठ हर आय आमापाली गांव के। दस कोटी म ये गांव के सोर होवत रहिस। गांव के जतका रहोइया मन तउन एक माई कस पिला रहंय। विपत परतिस कोनो ला, तव जमो गांव भर के मनखे मन जुरिया के गोबरधन पहारकस अलगा लेवंय। मरनी हरनी होतिस तव, के बर बिहाव माढ़तिस। खइमो खइमो जुर जातिन। एक टांग अटाई देइस एक टांग बटाई दिस, मोर पेट भर गे कस किस्सा, सबके काम म सब्बो के साझी रहितिस। पहुना पही के मान गउन, सब मा, ओ गांव के सकइय्या तिर तखार म कोनो नई रहिस, उहां के अघुवा रहिस बहोरन मण्डल। बहोरन कहत लगय ओ टेम मा। सोझे, पूंजी पसरा धन दोगानी के सेतिर, ओकर नाव नइ रहिस। पूंजी म तो ओकर ले बड़का कतको झन रहिन, फेर ओकर मन के पूर पवइय्या कोनो कहां पाते ओ दिन मां। असगई पसगई म एके झन रहिस ओ कर का का बात कइबे ? बहोरन मण्डल के परभुता मा कुकरा बासत, बस्ती म कोल बिल कइय्या शुरु हो जावय। माई लोगन छरा छिटका देहे बर बहारे लीपे बर माढ़ जातिन ओती परभात फेरी बाला मन के मिरदंगझांझ मंजीरा के झन झन फट- फट सुनाय लगय। बरदिहा पहटिया के दुहाई के घरो

घर खदर बदर सुनातिस। सब अपन अपन काम म लग जातिन फेरी बाला मन के किरतन म धीरे धीरे लइका सियान सकलात कोरी डेढ़ कोरी हो जातिन घरो घर एक एक खोंची मुठा भर जेकर जतका मन रहय हरहिंच्छा ले देवत जांवय, लोथा भर चाउर रोजहा सकला जावय। नवा तलाव के पार खाल्हे के, दलकी फूटय तउन धरसा हा, येई सकेले चाउर के परसादे पटा जावै। एको साल रमायेन येकरे परसादे हो जाबे। एक साल तो बंधवा तलाव मा पचरी पिटवाइन तेमा येही मा के खरचा करे रहिन। किरतन मण्डली के जमे बाजा, गाजा, बड़का रमायेन अऊ रहंस बेड़ा के चौंरा सब एही ठोम्हा खोंची चाउर के राउर माया म होये रहिस। रामलीला के सिंगार, पांव म धुंके के पैरदान हरमुनिया, गैस बत्ती दरी सब कुछ येई दूदी दाना चाउर के बल में बिसाये रहिन। ये तो सब दउंरी के बइला मन के काम आय। असली धारन खूंटा तो बहोरन रहिस। आन मन ओला धारनखूंटा मानंय फेर ओहर अपन ला नेब्ह के पथरा समझय।

बहोरन होत बिहनहा उठके किरतन बाला मन ला आरो करतिस कभू किरतन म जातिस कभू नइयो जातिस, फेर पहिली ओला नहाये बर जाना है। आठो काल बारो महिना ओकर ये काम म बिझुक्का नई होवय। दतवन लोटा धर के तरिया कती जातिस उहां घाट के बगरे चिरी ल बीन के सकेल के फेंकतिस। मंदिर के तिरे तीर ल खरहार के फेर ''जय गंगा'' करतिस। जादा पढ़े लिखे लोग तो रहिस नहीं इसलोक

इसतुती तो जानतिस कहां ले ? तभो ले सीताराम राधेश्याम कहत कहत घर आतिस । डहर म जउन कोनो ल भेंटतिस राम रमउवा पांव पेलउटी करत ओला लहुटना हे । संवागे अपन करम धरम करके आन कोनो ला सिखोये के ओकर ये उजोग हर सतजुगिहा गुरु मन कस रहिस । करतब ला देख देख के आन कोनो मन लाज के मारे कस करे लागंय । चटर चइय्या ल नई जानय । बोलतिस कभू तब दुटप्पी थोरकन । ओतके म तो सब हो जावै का करतिस जादा गोठिआके ? बोलकरहा तो ओ रथे जेमन सो करनी कुगत कुछ बनय नहीं । थूंके थूंक मा लडुवा ल बांध थें ।

बहोरन हर अपन घर के खाता पीता आदमी रहिस । कोनो अनगइंहा डहर चला ल देख पारतिस तव ओला केलउली अरजी बिनती करके एक न एक छिन बिलमातिस । चाहे तो गुर चिंवरा, गोरस खवातिस पियातिस नइतो बनाये खाये बिन जाये नइ देतिस । ओकर अरजी बिनती म कोनो भी कइसना आदमी होतिन तउनो सेवर हो जावैं । जल्दी काम जवइय्या मन तो बहिरबट्टा रेंग देवंय । गुनँय देख ही बहोरन तव फेर बिलमाये, खवाये पिये, बिन जाये नइ दीही । कभू कभू कहय धन दोगानी तो ओरिया के छांव आय । छिन म ऐती तब छिन म ओती । जव अपजस भर संग म जाना हे । फेर ये पानी भरे खाल के कुछ ठिकाना नइये । आज हावे तव काल के का भरोसा हे ? राम के चिराई राम के खेत । हमर येमा का हय ?

बहोरन के परभूता म गांव म कुछू झगरा झंझट कहूं होऊ तो गय, तेला

ऊंहे चार झन सियान सामरथ के सल्लाह ले के सुरझा देना हे। डांड़ करतिस तव दस गड्ढा तलाव म खंती कोड़वाये के। चाहे सतनरायेन चाह रमायेन कहवाये के। ओइसे तो रोजहा रात के ओकर परसार मे रमायेन नित होते हे। बहोरन चुप्पे चुप सुनत रहय।

सगर दिन एके किसम कहां रहे पाये ? कभू उंच तब कभू नीच। तरी ऊपर तो चलत चक्कर के पुठी हर होबेच करही। उये सुरुज नरायेन ते बुड़बेच करही। आमापाली के घलाय ओही हाल होंगे। आमा के मिठास तो धीरे धीरे नंदागे। एक दिन अइसे आइस के अमली होगे चुर्रुक अम्मठ।

गांव के कुछ लइका मन पढ़े लिखे के नांव लेके सहर मा गइन। पढ़े के किताब म तो उन जउन रहिन, तउन रहिन, फेर आने आने बात ल उहां के आदमी मन देखा सिखी मा सीख गइन। का का बात ला पक्का सीखिन ? तव बेरा ऊये ले सूत के उठाई, चाह, सिगरेट, सिनेमा, जासूसी किताब, आधा रात के जगाई, कहना कुछ करना कुछ, बुध्दू बनाये के तरीका सुनके सीखिन, कतेक ला कइहा उन ओ सब गुन ला सीख गइन, जउन सहर मा आके गांव ल नवा रास्ता बतावा ओला उठावा, तुमंन सेवा म अधुवावा, बुढ़वा सुढ़वा मन ला हटावा, नवा खून नावा जोस, सब नावा होना चाही। जुन्ना सब निकामिल हे। सियानन के सब रकम ढकम अबिरथा हे देस ल पिछघुच्चा लाये के ढर्रा हे। बस फेर का पूछत हा ? छोकरन गांव म गइन अउ सहर म जउन सुने रहंय तेला बिन गुने, अजमाये बर उमाह लेलिन।

पहली तो चाल ढाल सामरथ लाइकी ल देखके, जोजिया के, बस्ती के बोझा ल बौहावैं। जउन हर बोहय तउन हर पांप पुन्न ल डेरा के काम करय। लेकिन अब तो सब नावा रकम के रंग ढंग आ गइसे। बहोरन हर हांथ जोर के अधुवाई करे बर परतेज दिहिस। चुनाई मां एक झन आदमी आगे। ओकर नाव रहय बटोरन लाल।

बटोरन के परभूता चलिस जुन्ना बात नंदाये लगिस, नावा पध्दत चालू होगे, एको बछर नइ होये पाइस के आमापाली मँ कतको नावा चाल चलन हर चले लगिस। आऊ जउन पुलुस दरोगा देखे बर नोहर रहय, तउन अब उँकर सरसेत अवाई बाढ़गे। रोजहा रमायेन तो कहां गय ? अब सिनेमा के गीद गली, खोल तलाव, नंदिया म सुने बर मिले लगिस। परभात फेरी तो कती गय। फेरहा लठिंगरा टूरा जमे कती दिखे लगिन। मामला के पेसी, बेसी होये लागिस। खड़े फसल म गरुवा चरत हे कोई छैंकने वाला नहीं। आधू तो होम धूम के महमही मिलय अब मउहा के सार निकलत हे। ओकर महक जगा जगा जान परत हे। का का बात ल कइहा, तइहा के सबो बात बदल के, नावा नावा जमो जिनिस आगे। कोनो कोनो जेला ये सब नइ भावय, तेमन कहंय गांव के नांव तो जुन्नेच आमापाली चलत हे येहू ल बलदा देवा गा। अमली पाली करा देवा। गांव म एक ठन लाइब्रेरी खुलिस। ओमा किसम किसम के, नचकहारिन मन कस पहिरे डउकिन के, अइसे अइसे पुतरी बाला किताब महीना महीना पाख पुठ आथय जाना माना उन पतुरिया होंय। थोर कारे लाज न बात, चोरी डांका लूट मार ठगा फु

साड़ी के किस्सा ओमा लिखाये उढ़री उढ़रा के बिरदंत बखाने, कतको किताब उहां रहय। जइसना जइसना किताब तइसना करनी के हिसाब, झन पूछा गांव के धन दोगानी तो मामला मुकदमा, पुलुस दरोगा, सिनेमा, मंदमउहा म गय, अउ ओकरे संग मा गांव के धरम करम घलाव हर बोहागे। हाय हाय, तरा तरा के गांव वाला होये लागिन.

जउन बरथे तउन बुताथे।
फरथे तउन झरथे
तपथे तउन खपथे

किसम किसम के तपनी म ततांगे उहां के रहवइय्या। अउ गांव भर के आदमी जुराव कर डारिन। कहिन, अब ये नावा नावा चाल ल बंद करा। नइतो अइसना नावा के ''आवा'' म हमन सब बावा हो जाबो। कुछू भुंजी भांग नइ बांचही तब लुआठ ल खाबो ? बहुंत बेर ले तनक तनक के, फेर सेवर होके, गोठ बात करके, सबो झन सल्लाह मढ़ाईन के अब सिअनहा मन के बुध ला लेके, उनकर कहे कहे मा गांव के जवान अउ लइका मन चलबो। तभे फूलबो, तभे फरबो। बिन समझे करेन तेकर फल ल जमे पायेन। गांव के सियान अउ लइका मन एक संग चलबो। तभे फूलबो, तभे फरबो. बिन समझे करेन तेकर फल ल जमे पायेन गांव के धन अउ धरम ल गंवायेन। 'अंधरा के लउठी हर एके घौं हजाथे' अब हमन दही के भोरहा म कपसा ल नइ खावन। चेत गयेन, सुने अउ देखे म तीन आंगुर के फरक रहिथे तेला भोग डारेन। जान डारेन। अब ये गांव हर फेर सीत्तोन के

आमापाली हो ही। हमन फेर जमो मिल के बनावो।

बटोरन लाल हर एक गोड़ला अलगा के ,हांथ जोर के भरे समाज म खड़ा होके कहिस, मोर कसूर ला छिमा करिहा भाई ददा मन। अपन लइका हर जांघ म पिसाब कर डारथे तव कोनो जांघ ल थोरे काटथें ? तुहरे लइका अव। मैं अब जान डारेंव के गांव ला अच्छा चलाये बर बटोरनलाल नऽही बहोरन लाल होना चाही। ''सियाबर रामचन्द्र की जय'' बोलवाइन ओती बहोरन मण्डल सुसक सुसक के रोवत रहय। सियान मन के बात ल सुरता करिस के बिहनहा के रसता भुलाये हर बेरा बुड़तहा बहुर के घर आगय तव ओलासंवास लेना चाही।

✧✧✧

39

पतिबरता के पानी

ये बात हर तइहा तहइा के अय। कतेक जुन्ना होही तेकर अनताज तुमन लगा लेवा। फेर हमर बबा हर बतावत बखत कहिंस के ओकर बबा ल, तेकर बबा हर बताये रहिस हे।

हां तो गरहन परिस तव कांसी के दस कोसी के रहइय्या मन गंगा नहाये बर पउहा के पउहा निकल चलिन। रस्दा उप्पर एक चखला म एक ठन गरुआ घलाये परे रहिस। ओकरे उपर गोड़ ल मढ़ाके जमो तिरथहा मन नहाक के जात रहंय। देखा सीखी म एक बाम्हन महराज घलाव ओइसने नाहकिस। गऊ माता ल बहुंत दुख लागिस के बाम्हन होके लात लगादिस तब आन मन का नइ करहीं ? जब धरम के धारन खूंटा हर हालही डोलही तब छान्ही परवा के का हाल होही ? बाम्हन ल सराप झोंके बर गऊ माता कहिस। बाम्हन थरथरावत हांथ जोर के कहिस आन बर कुछू नइये मोरे पाप जादा होगे। गउ माता कहिस – उन रेंगइय्या अंड़हा आंय। पांप पुन्न ल जादा नई जानँय। तैं तो पंडित अस। सबला सिखौना देथस। "आन ल सिखौना दय अपन बइठ रवनिया लय" अइसना म कइसे बनही। गउ माता बाम्हन ल का सराप दिहिस ? कहिस – तैं बारा बछर ले गदहा होबे। काबर के गदहा के काम करे हस। गदहा होये के मन नई होही तव ससुरार म अतके दिन रहे बर परही। बाम्हन हर बम्हनिन ल पुछिस अउ ओकर सल्लाह म गदहा होये बर सऊंगा गइस।

सराप ल दुनू परानी झोंक लिहिन। बाम्हन गदहा लहुट गे परिबरता बम्हनिन, गदहा के पीछू पीछू रेंगत रहय, गदहा बइठय तव ये मांछी हांकय। किन्नी हेरय, देव्ह ल सल्हारय। गदहा कभू अनपैनहा म रेंगय, बिना छेंके बम्हनिन, ओकर छांव बरोबर पिछलग्गे चलत रहय। बम्हनिन छोकरी अत्ती सुघ्घर रहिस जेती जावय अचम्हो म आदमी पर जावैं। एक बूंदी पानी के नहवाऊ, गोरी नोरी, जउन देखत तउन बिना मिलकी मारे देखते रहि जावय। सांचा मा ढारे कस ओकर हांथ पांव। केंवची खीरा कस पिंडरी, आमा चानी कस गाल, माथा म टुक्क लाल सेन्दुर, देखइय्या अबक्क हो जावँय। पुछइय्या मन ला बतावय गउ माता के सराप लगे हे अउ तर तर तर तर आंसू बोहावत रहय। अपन तो गोसइय्या के रखवार रहय अउ ओकर रखवार ओकर सइता, ओकर पतिबरता धरम हर रहय।

बारा बछर के पुरती के दिन आ गइस। गदहा एक तलाव पार उप्पर बइठ गय। का देखथ हे एक सुक्खा पीपर पेड़ म उहां के माई लोगन मन पँच पँच लोटा पानी ल रितोवत हें। राजा के हुकुम हे। सुक्खा पेड़ ल देख राजा हर नेंगी ल पुछिस – का बस्ती भर के जमो माई लोगन मन आ गइन ? नेंगी बताइस सबो आ गये हें फेर कोढ़ी धोबी के सुआरी हर अभी नइ आये हे। ओहर अपन गोसइय्या के सेवा जतन करके आहूं कहत हे। बेरा खस लत म धोबनिन आइस अउ पांच लोटा पानी जरी म रितोइस। पानी के परते परत पीपर के फोंक उल्होये लगिस। ये अचरित ल बम्हनिन बिचारी घलाव देखत रहिस। ओती राजा नेंगी, बाजा गाजा बजवाये लागिन। इरखा के मारे कतको डउकिन गोठियावत रहंय – कलजुग आगे दाई ! कलुट्ठी धोबनिन के पानी

म पीपर उल्होगे। सतवंतिन होतिस तब अपन घर बाला रोगहा ल बने नइ कर लेतिस ? हंड़िया के मुहं म परई देहा फेर आदमी के मुँह म का देहा ? बम्हनिन हर धोबनिन सो गोहराइस ! अवो दाई ! मोरो देवता उप्पर पानी रितो दे, मोरो उद्धार ओ जाही पर के पिरोहिल धोबनिन हर, गदहा उपर पांच लोटा पानी ल रितोइस के बाम्हन हर अपन असली सरुप म होके भगवान के इस्तुती करत खड़े हो गइस। फेर तो इन्दोहिल मातगे। छिन भर म गोठ हर पैंरावट कस आगी बगरगे। खमखमागे आदमी जय जय कार करे लागिन। धोबनिन अकबकाये खड़े हे। धोबनिन हर बम्हनिन के विनती करिस मोरो गोसइय्या उपर चल तहूं पानी रितो देबे। पानी के परते बुढ़वा रोगहा तउन सुघ्घर छोकरा गंगा नहाये कस उठके खड़े हो गइस। परिबरता के पुन्नम दुनू के बनौकी बनगे। जमो जुरइय्या मन, बाम्हन बम्हनिन अऊ धोबी धोबनिन के, गोड़ तरी गिरे लागिन। राजा हर दून्नो जांवर के पूजा आरती करके उंहे रहे के सबो बन्दोबस कर देइस। सबके मन हर पीपर के डारा कस हरियार होगे। दूनू पतबरता मन ल गंगा – जल बदवा दिहिन। जइसने ओमन के उजरे घर हर बसगे तइसने जमो के बनौकी बनय। सब झन खाइन पिइन राज करिन।

दार भात चूरगे,
मोर किसा पूरगे.

✧✧✧

42

सतवंतिन सुकवारा

जउन हर ये धरती म जनम लिही, तउन हर एक न एक दिन माटी म मिलबेच कर ही । ओकर संग म, न तो नता गोता जाही, अउ न धन दोगानी हर काम पर ही । ये ही तो संसार आय । जियत भर आदमी कतका उधामत करथे, फेर मरे के बेरा सब जुच्छा के जुच्छा । संग म जाथे बस जस अउ अपजस । ये बात ल लगथे सुकवारा हर निचट गँठिया के अपन मन म धरे रहिस हे । आदमी मन जित्ते जियत अनजाते नई पाइन । ओदिन सुकवारा के काठी म जब मरघट्ठी म जमो गांव भर के आये रहिन तब ओकर गुन के कतानों बिरदन्त हर गम मिलिस । संसार म जय आदमी तय किसम के होथय । कतको परस्वारथी रथंय तब कतको मतलबिहा रथंय । फेर सही बात ल तो कहे बर परिच जाथे ।

सुकवारा तेल चिकनी सांवर देह के दलदपट छोकरी रहिस । जब कुछू गोठियातिस त ओमा हांसी जादा अउ गोठ बात कम रतिस । कतको झन ओला खिसियावै के छोकरी जात के अइसन गेजगेजही बानी हर, अच्छा नौहय । दँतखिसरी नइ तो । सुकवारा फेर हांस देतिस । का धरे हे ये जिंदगानी म, पानी के, फोटका तो आय । जय दिन जियत हन हांस गोठिया लिही । घोरमुही रहिके तोबरा फुलोये ले का मिल जाही ? सुकवारा के खिरा बिजी दांत हर हांसत खानी चमकाय तक लगय करिया लुगरा म तोपाये कड़ी बाला करधन के एक लर दिखीस हे । छुछिंदही सुभाव के

लइका बजनस बंधाये बदन के का बरनन करबे ? बतावत नइ बनय। जउन देखे रहिन तउने जान ही।

बिहाव होके ससुरार म आइस के थोरक दिन म घर के सबो बूता काम ल बोह लिहीस। होत भिनसरहा उठ के गली खोर म छरा छिंटका, घर अंगना के लीपा बहारा, कोठा के गोबर, भड़वा बरतन, मांज धोके, मढ़ा डार तिस। सास हर उपरछवा कई दिन खिसियावय के ये लइका कौन किस्म के हर दाई ! एको दिन सुतथे धन रात भर जागथे रथे। अपने देह के थोर को सखला नई राखय। दिन भर बूता, दिन रात बूता। सुकवारा हर ओकर जुआप म गिजले हांस देतिस। मसखरी म एक दिन ओकर सास कहिस – हमर बहुरिया हर समधिन के पेट भीतरी घलाव, डेरी जेवनी सँलगत रहिस होही। सुकवारा मुस्किरावत कहिस – तूं ही तो मोरे दाई आव, तूं ही जानिहा, पेट भीतर में कहिसे रहेंव। सासो घलाव ओकर हाँस भरिस।

सकुवारा के सब रहिस फेर कोरा म एको ठिन लइका नइ रहिस। कतको उजोग दिया बाती, गुनिया, मतिया, देंवता, धामी, अदना बदना, तिरिथ बरत, उपास धात दान पुन सब करके देख डारिन फेर भगवान हर नई चिन्हिस। सुकवारा के बड़ाई सुनके इरखा करइया डउकिन मन कहंय – बकठी तो आय, ठाठा गरुवा के का हे ? न दूध के न पूत के।

होनहारी ल कोन टारे सकही ? एक दिन ओकर गोसइया खेत ले आइस

के जर चढ़गे। कतको किसम के दवा मांदी रकम रकम के जुगती करके देखिन फेर ओर जर ह, जीव ल ले के उतरिस। सुकवारा जुच्छा हाथ हो गय। सगा सियान मन सुकवारा ल समझाइन के सइघो उमर काटे बर बाँहचे हे अपन देवर चैतू के हाथ ल धर ले। सुकवारा नई खंधिस। कहिस – इहें ते हावंव। कुछू करम खोंटहा रहिस होही, त तो मोर माथा के सेंदूर हर पोंछाइस हे। सब फर ला आदमी खाथे एक ठन फर ल नइच खाही तो का हो ही ? सियान मन मोर थोर को रेंगना ल आनतान देखिहा तब टोंक देहा। जुच्छा हाथ होइस तहां ले अपन देवरबेटा ल निचट अपन लइका कस दुलार पुलार करे लागिस संगे म खवाना पियाना सुताना तक। लइका हर जहां सुकवारा जातिस तिहां जातिस। तोलगी ल धरे च रहय। ददा दाई भुलागे लइका हर, सुकवारा, ओकर मनबोधवा नांव धर देइस।

आदमी कतको कुछू गुनथे फेर भगवान हर चाइही तउने तो होही। होनहारी तो आय। अंगना म चैतू रात के सूते रहिस। बिहनहा देखत हें तो हाथ पांव लुंजवा हा गया हे। ओला ''बाई'' मार दिहिस कतको किसम के उञोग ओला बने करके कर देखिन, गुनिया, बइद डाक्टर कोनो कुछू बतातिन तउनो कर देखिन फेर चैतु खड़े नइ होये सकिस। पानी कस, पैसा ल सुकवारा बोहवाइस। अपना गहना गुरिया तक ल बेच भांज डारिस। मनबोधवा ल पाये पाये इहां ले उहां सुकवारा गिंजरिस फेर कुछू हाथ नइ आइस। दंत गिरजी सुकवारा के तर तर तर तर आंसू बोहावत रहय। बिमरहा चैतू के सेवा सखरोज अपने संवागे करे लागिस। चार दिन तो चैतू

के सुआरी हर सेवा करिस फेर धीरे धीरे मंनटुटहा ठेंग ठारे कस, फुसुन फइहा शुरु होगे। सुकवारा जान डारिस जांगर के चलत म सब मोहो मोहो करिन अउ अब थोथवा बइठांगुर होगे तब गरु होये लागिस। ले का होइस ? अपन अपन जइसे करनी, तइसे पार उतरनी। सुकवारा चैतु के भीतर बाहिर सब सेवा ल बजावय। ओनहा चेंदरा के सखला, नहवाना, खोराना, खवाना, अंचवाना सब तोरा अपने हाथ म मढ़ाये लागिस। ये तो सुकवारा उपर दुख के दोहरा, एक ठन आने धतिंगा शुरु होगे। चैतू के सुआरी तउन, सेवा सखरोज कराई छोड़के पारा परोस म फुसुर फुसुर चारी चुगली आंसू ढरका के शुरु कर दिहीस। ''ओहर मोर जेठानी नोहय सउत ये सउत।'' लइका ल मोर आघू अपन बस मँ कर लेइस, अउ अब गोसइया ल घलाव कबजिया लेइस। दिन रात उंकरे तिर म रहि रहि के मोह थोप डारिस। का का ल गोठियावैं अपने जांघ छउघारै अपने लाजन मरय, – कतेक ल कइहौ, ओहर जुच्छा हाथ के ऐंहवाती आय अउ मैं हर मुठा भर चुरी पहिर के कुछु बरोबर नइ अंव। ये गोठ हर पैरा के आगी कस बगर गे। हमर नांव झन लेहा कहिके, डउकिन मन तलाव, नंदिया, घाट, घटौंधा म येई गोठ ल बगरा देईन। डउकिन अब सुकवारा ल आभा मार के बोलियाये लग गइन तोर इंहा के उनला बने लागिस है ओ ? छि: दाई। मुंह ले कइसे निकलगे तोर देवर के बेमारी ल कथौं। भितरघवा अइसने कोचे, छेदे लागिन।

धन्न हे भगवान ! उदेनाथ ! तैं सबके देखइया का मै अइसने कहे के लाइक हौं ? का करत हौं पावत हौं। सोंगर मोंगर देवर रहिस तब कुछु कहै लाइक

नइ होयेंव अउ अब निकामिल, बइठागुंर, थोथवा होगें तब चारी चुगली लाइक मैं हो गयेंव, फुटता करम के ताना ना ना, ये ही ल कथें। सास ससुर मन सब बात ल देखत, जानत, सुनत समझस रहिन के कोन हर पीतल ये, अउ कोन हर सोन ये। एक दिन सुकवारा अपन सास ससुर सो गइस अउ कहिस के चार सियान के सिखौना, ओदिन नई मानेंव, । मनबोधवा के ददा बर चुरी पहिर लेतेंव। तब आज बोली ठोली काबर सुनतेव अब मंही कहत हँव मोला चुरी पहिरा देवा सास ससुर तो पहिलिच ले अइसन हा गुनतेच रहिन। चार सियान सगा अतमा ल बलाके, सुन्दर सुकवारा ल थोथवा चैतू बर चूरी पहिरा देहिन। सुकवारा अप अपन घर गोसाइया के सेवा करे लाइक होगे।

चैतू एक दिन सुकवारा ल कहिस, मोला बाजार देखा देते ओ। कतेक दिन होगे देख लेतेंव, हुकुम के हाजिर सुकवारा, अपन गोसइया ल खंधय्या पाके, बजार लेके चल देइस। चैतु गइस बजार देखे बर, फेर अपने हर बजार के देखनी हो गए। जमे आदमी जूर गइन। जतके आदमी ततके बात। कोनो कोनो तो सुकवारा ल हाँसिन के ये कइसे डउकी आय ? येला लाज नई लागिस फेर बहुत झन मन ओला संहराइन। धन्न हे पतबरता नारी ल, लक्षमी आय येहर।

ओई बजार म सहर ले सेवाइक आये रहिन। काकर सेवा करबो कहिके, आदमी खोजत रहिन। गँवाई म जाके सेवा करे ले, जादा सँहरौना मिलथे। ओमन इंकार तिर म आके कहिन–हमन ये निकामिल ल एक ठन ओनहा

खिले के मसीन दे देबो। सुकवारा कहिस – मैं जिया खवा लैहों ददा। मैं भिखमंगिन नो हौं। तुंहर पुन परताप म, जिये खाये लाइक हावन। सेवाइक मन ला लगिस कि दुनिया म सब आदमी एके किसम नइ हें। कतको झन दूसर के मदत ल नइ लेना चाहैं। सेवाइक मन समझाइन विकलांग बरिस हे ऐहर। खोरवा लुलवा, अंधरा कनवा, मुक्का मन ल मदत करके कुछु काम करे लाइक बनाये के काम म हमन निकले हावन। गांव के मनखे मन के जोजियाये म मशीन लेहे बर सुकवारा संउगा गइस।

चैतु हर घुमारै मशीन के चक्का ल, अउ सुकवारा हर ओनहा ल खिलय। चिरहा फटहा के पयसा नइ लेवय सुकवारा। ओला पयसा लेहे बर जोजियावैं तब कहय भगवान हर मोर करम ल फटहा बनाये रहिसे हे तइसने ये ओनहा मन फटहा हें। जतके ओला जोर देहों खिल दैहों तब सबके देखइया भगवान हर कभ्भू न कभ्भू मोरो फटहा करम ल जोरही। नावा कुरथा के काज बटन लगाय बर अपन अबके सतन अउ पहिली के देरानी ल सिखो डारिस सुकवारा हर।

एक दिन मनबोधवा के दाई हर, अपन सउत सुकवारा के गोड़ ल धर के बम फार के रोइस, के–दीदी। मोला असीस देके मोर पांप ल काट दे। मैं देवी दाई के ऊपर थूक डारे हौं। सुकवारा घलाव ओला रपोट के रोये लागिस। खेलकूद के मनबोधवा आइस तउनो दूनो दाई के बीच म घुसर के रोये लागिस। आंसू के पानी म सब मे मइल हर धोवागे।

सुकवारा अब संसार म नइये, फेर ओकर गुन के महमही हर अभी ले गमकत हे। किताब म नइये तौ का ? हिसाब म तो हावय। लगथे जतका दिन ले संसार हर चलही, ततका दिन ले सुकवारा के नाव हर घलाव चलते रइही।

जब भोलवा भोलाराम बनिस

भोलवा हर आजकाल भोलाराम बाजत हे। अपने गांव भर मा नऽही, तिर तखार के दस कोसी म, ओकर मान बड़ाई होवत हे। कोन जानय ओकर अंतस म परस्वारथी काम बूता करेके, कहां ले उमाह आगे ? कुछु गांव जल्ला काम करे के बेरा आइस तहां आघू धुरा म भोलाराम ला तूं पाहा। का नवधा रमायेन होवै के तलाव पोखरी के साफ सफाई, गली खोर म दर्रा पाटना होय, नेवरात, गउरा गम्मत, कुच्छू काम आ गइस ओकर बिना परंगत नई परय। देखइय्या मन ला अचरित लाग थे। पहिली तो निचट सितमरहा मुंह लुकौना रहय। कुछु जोंग देता, तब कहय – मोर सो नई बनही, का करे सकहूं ? अंड़हा तव आंव। अंड़हा बर डंड़हे डंड़हा बस अतके रटन धरे रहय।

भोलवा अपन घर के दुलरूवा बेटा दाई के बड़का बाबू। बूढ़ीदाई हर भोलवा के बिहाव पठवनी देखे बर साघ मरय। ओकर कहाई के मारे छोकरा के बर बिहाव कर देइन घर गोसाइन आइस तउन पढ़े-लिखे गुनमंतिन रहिस। बिहान ले उठके गली ल बहार के, नहाये खोरे जावै। तलाव पार के महादेव म जल चढ़ाके मने मन म कहय भगवान मोर भोलानाथ ल विद्या बुध्दि दे देवे। एको दोहा रमायेन ल पढ़के घर भंड़वा के काम म भिड़ जावै।

पन्द्रा महिना दिन मा, घर ल छूही म खुँटिया के लिपाई पोताई, बहराई के

मारे, परछी ओसारी हर अइसे दिखय के ऐही म एक परोसा भात खा लेतेंव कस मन लग जावै । गांव भर भोलवा के सुवारी के बड़ाई होवय । रात बिकाल के तेल चुपरत चुपरत कभू कभू अपन भोलानाथ ल कहय – एको दू अच्छर तुंहू पढ़ गुन लेता तव अच्छा हो जातिस । कोनो गम नई पातिन रतिहा रतिहा एकक दू दी अच्छर ल घोख लेतव, लेवा हव कहि देवा ।

भोलवा कहय लछमिन ! मोर भाग म पढ़ाई गुनाई नइ लिखाये हे ओ । करम म रहितिस तव लइकई म पढ़ डारे रहितेंव । दाई बुढ़ीदाई मन कहँय अपन लइका ल मास्टर के पिटान खवाये बर नइ भेजन । कोन हमला नौकरी चाकरी कराना हय । हमर अतेक जजात के रहत ले, काबर आन के असरोइय्या होबो ? दुलार के मारे नइ पढ़े पायेंव । भइगे, अब बुढ़वा सुवा हर का राम राम रटही ? लछमिन के आंखी म आंसू डब डबा जावै । भोलवा केचुवाके कहय–जकही नी तो ! गांव के आदमी मन हांस ही 'बोलियाही' के अतेक बड़ बेच्छर्रा, अपन डउकी सो पढ़थे । ये का डउका ये रे ? तैं झन दुख कर, मैं नई पढ़ि हों तव का भूखन मर जाबो ? निसंसी रहव हमर कुछू कमती नइये ओ !

एक दिन पंचइती के गांव म गोठ बात निकलगे । गांव के बहुंत झन मन जोगिन के भोलवा ल गांव के सियानी ल सउंप देते न । साहेब सूभा के आवा जाही म उंकर बड़ाई कर ही । ओकर बड़का परसार हावै जमो के बइठरु के बेसाव घलाव माढ़ जाही । कतको झन कहिन – ओतो करिया

अच्छर भइंस बरोबर हे। कोनो आहीं तव एकर तो बक नई फूटही। ओमन कइहीं – ये गांव म कोनो पढ़े गुने आदमी नइये का ? हमर गांव के हिंनता होही।

एक झन चउजहा मुंहा छोकरा हर कहिस – तेकर ले लछमिन भउजी ल बना देवा न। रमायन पोथी पढ़े हे।

बइठक म भउजी हर जाही तब हमर भोलवा भइय्या घलाव ओकर संग झोला धर के पीछू पीछू जाये करही। सब झन हांस भरिन।

भोलवा ये सब गोठ ला सुनत रहिस ओला लगिस जइसे कँवल करेजा ल कोनो तिरछुल म छेद डारिस हे। कल्लागे जीव हर। गुनिस, लइकाई म पढ़ लिख डारे रहितेंव तव आज, अतेक बोली ठोली सुने बर काबर परतिस ? बिना पढ़े गुने आदमी के जियाई अबिरथा हय। कुछू पुछारी नइ हे।

घर म आके सुत गइस। खटिया म परे हे फेर नींद नइ परत हे। धुकुर धुकुर जिव करत हे। ये पाटी ले ओ पाटी। अलथी कलथी देवत हे, रात पहावत नइ हे। थोर थोर बेरा म उठके तराई ल देखय। रात हर पहार होगे। पँगपँगहा मुहाचाही होइस तहां लछमिन ल जगाइस। लछमिन कहिस – आज तुंहला का होगे ? अतेक बिहान ले उठ गये हा। आन दिन तो बेला भर सुरूज नरायेन चढ़ जावै तव उठाये ले उठत रहा, तउन मोहि ला जगावत हावा।

भोलवा कहिस – को होइस आन दिन तैं हर आगू जाग जावस, अब तो महूं

हर जाग गये हंव। देखबे अब रोजहा तोला जगाहौं। अइसे जागे हंव, के फेर सुताये ले नई सुतँव।

रतिहा पढ़े के मंदरसा म भोलवा रोज जाये लागिस। कोनो कोनो बोलियावँय कुड़कावैं, बुढ़वा सुआ राम राम रटत हे। मन मा कहय – कहि के का ? करके बताहौं, देखाहौं, तब बात हे। देखा हिजगा, ओकर जँबरिया मन घलाव, पढ़े बर धर लेइन।

दिन जात बेरा नइ लागय। अइसने करत चार महिना नहाक गे। घरो म किताब पढ़य, भुलाये कस करय तव लछमिन सो पूछ लेवय। लछमिन ओला आऊ पढ़ाई म लगाये रहय। अब तो संग म रमायेन गाये लगगे। गजट पावय ओहू ल बाँचे कस रहय। नावा बरुआ उठे हे, फेर घर म गुरवाइन। बहुंत बहुंत बात ला अब जाने समझे लग गे। जउन मन पहिली बोली मारत रहिन , तिंकर मुंह फरागे। अकबका गइन सब, भोलवा तो कतेक गोठजान होगे। पढ़ाई के का गुन होथे तेला भोलवा ले जादा आन कोनो नइ जानँय। लछमिन हर पढ़त पढ़त कुछू ल जान के गलती पढ़ देतिस तव भोलवा टोंक देवय। ऐई तो लछमिन के मनसूभा रहिस।

भोलवा मंदरसा के महात्तम ल अब जान डारिस गांव के मंदरसा के छान्ही हर जोगरत रहिस तेला अपन अघुवाई करके सजवा डारिस। आघू अपन चीज बस लगावैं फेर खंगे बढ़े, आन ल पीछू गोहरातिस। गांव बस्ती मं ''आन ल सिखौना दय अपन बइठ खनिया लय'' करे ले कुछू काम नइ होवय। भोलवा मंदरसा ल कहय – ये मंदिर हे। सरसती माता इंहे बिराजे

रथे। अड़हा ल सुजान के मंत्रा देथे। एक झन ओकर जंवरिहा रह मसखरी म कहिस भइया ! तोर तो दुनू हांथ म लड्डुवा हे। मंदरसा म सरसती अऊ घर म बिराजे लछमिन हे। जमो सुनइय्या मन खलखल हांस भरिन।

हाल म गांव म पंचइती के चुनाई होइस। गांव भर के जमो जुर के भोलवा ल पंचइती के मुखिया बनाइन हें।

गांव वाला मन बोझा दिहिन अउ हरु हो गँय। अब भोलवा के संग मा लछमिन के संसो हर बाढ़ गइस। खा पीके रात म दुनू परानी गुनँय के कोन कोन काम ल करे जावय। जेला गांव बस्ती मिल के कर सकबो अउ गांव वाला मन ला जमोला अच्छा लगय। सब सो सल्लाह लेके कुछू काम ल उठावै। अपन अघुयाये रहय, गाड़ा भंइसा के होय के जांगर के बूता रहय मुखिया हर आघू आघू करके आन ला संग म लगावैं।

भोलवा हर एक दिन जमो गांव भर के आदमी मन ला जोरिस। दाई माई मन घलाव आइन। सब सियान मन के पांव परके अपन अंतस के बात ल गोठियाइस, कहिस – गांव बस्ती के बढ़ोत्री करे बर, हमन सबला एक फेंट होना पर ही। जमों कहिन–ए फेंट रहिबो। तब आज ले कोनो भी आदमी कोन्नो के गरुवा ले खेत खूंटी म देखही तव ओला पहिली खेदही। हरहा गरुवा के गोसइय्या ल चेताही। अब सबो झन अपन अपन गाय गरुवा के जतन सखल कर ही। सब झन खुसियाली म बजरंग बली के जय जयकार करिन। दूसर बात हे – कोनो भी आनके रुक राई डारा पलइचा ल लइ

काटहीं अउ बंजर के उजार झन कर हीं। अपनो खेत के रुख ला चाहे थंगाली ल काटहीं तव पहिली अपन पारा के पंच ल बताके जाहीं। कोनो गउचर धरसा चपले होहीं, तेमन सवांगे अपन बेजा कब्जा ल छोंड़ देही। अऊ अपन अपन नोनी बाबू ल पढ़े बर मंदरसा भेज हीं। आनके कोई जिनिस के चोरी हारी कर ही तेमन गांव ले दुरोहिल होही। सब झन खंध गइन तव बोलो ''रामचन्द्र भगवान के जय।'' जय जयकार म गांव गझीन होगे। भोलवा गुर पागे लाई के परसाद बंटवाइस। सब गांव भर एक सल्लाह के हो गइन, तिहां हर किसम के बने बने बात अपने अपन होये लागिस। कतेक ला कहँव तीर तखार के परोसी गांव मन म सोर उड़े लगगे। आनो गांव के मन भोलवा के देखा सिखी, अपनो गांव के बंधोज ल बनाये लगिन। एक माई के पिला अस रहे लगिन।

भोलवा ल अब सब छोटे–बड़े जमो, भोलाराम कथे।

✧✧✧

55

जंगो के जोमर्दी

नांव तो ओकर भाना रहिस, फेर जइसे रहिस सुभाव तइसे चलगे नांव। कुछु अन्नेत जहां देखय सुनय, तहां जंग हो जावे तव जमो ओला जंगो कहे लगिन। कोनो के छय पांच न तो ओला भावै, अउ कुछु अनफभित हर न तो ओरावै। कही देना हे चाहे कोन्नो होवैं। सफा सफा कहोइय्या के गोठ हर चाँटी दुरगासी चाबे कस बिसिया हीं नहीं त का नीक लागही ?

भिनसरहा सेन्दूरा फूटत सूत के उठ जावै। गली खोर ल, खरहार बहार, छरा छिटका देके, दंगर दंगर ओला नवा तलाव पहुंचनेच हे। घाट घटवंधा के चिरी, चेंदरा राख कचरा ल फेंके बिना, ओला परछिन नइ लागय। घाट के सफाई करते करत, संगे संग कचरा बगरोइय्या मन के सात पुरखा ल पानी रितोतिस रंग रंग के गारी ओकर मुंह ले सुन लेवा तभे तो ओला कहँय जंगो।

सीझे मरकी कस तेल चिकनी कारी, फेर ओनहा कपड़ा घर भंड़वा सब सफ्फा जग जग ले। खीरा बिजी कस दांत, पाटी पारे कोरे गांथे, चूरी पटा ल मांजे निच्चट, रग बग ले। डफोड़ डभोड़ के फरी पानी म नहावै अउ मरकी ल छाती भर पानी म पेल के निचट फरियाके भरय। ओकर नहावत बेरा म कोनो थोरको घटवंधा के पानी ल मतलाके तो देखँय ? कान के कीरा ल तुरते झर्रा देना हे। लम्मरदार के लइका होय, के सुध्दू

साव के सारा रहय। जंगो ल कही देना हे – तूं होहा लाट गवन्नर अपन घर के। फेर घाट घटवंधा ल खराप करे के का अक्तियार हे ? सबो के बउरे बर बनाये हें सियान मन। सबला नेत परवान म रहना चाही। कोनो एक झन के बबा के नोहै। कतको गरबइता मनके पानी ल, एक छिन म उतार देवै। कोन्नो ल तो सोगातिस ? कहां पाहा, राम के नांव लेवा।

एक दिन बिहनिया नहा के जंगो, मरकी बोहे तलाव ले आवत रहय। कोष्टहूँ भँवराही भींजे लुगरा पहिरे, सटपट सटपट बजन के मारे लकर पकर रेंगत। मरकी के छलके पानी ल मुंह मेर के पोंछत रेंगत देखिस, के सरपंच के छोटे बेटा हर गली म बईठ के कुढ़ोवत रहय। लइका के दाई हर लोटा म पानी धरे अगोरत हे। भई तो गे, जंगो जंग होगे – कोन टूरा ये रे ? डहर ल बिगाड़त हे। धन्न हे धन्न हे दाई ! बड़का आदमी बने हें, अउ छोटे आदमी के काम करत हें। सुन ओ सरपंचिन दाई। मोर लहुट के आवत ले तैं ये रद बद ल टार के, सफा कर देहे रहिबे, नइ तो फेर ऐई लंग कलंख हर मातही। तूं धनमंतिन हावा अउ हम गरीबिन हन तव अपन अपन बर। राम रस्दा ल बिगाड़े के कोन्नो ल हक्क नइये।

आरो पाके कतको झन जुरिया गइन। फेर कोनो तो एको आखर कोनो ल कहितिन। सब सन्नासट्ट खड़े खड़े मुकुर मुकुर देखत हें। जंगो के जंगाई ल देखके दुरिहा म खड़े दू झन मन धीरे धीरे गोठियाइन – के ये तीन कउड़ी के मुंह बायेड़ डउकी हर, कतक बड़े आदमी के हिनमान

करत हे। तामा अउ सोन के फरक हे।सरपंच के सरहा पैरा म जंगो के जमो जजात बेंचा जाही। का कलजुग आगे,बड़े छोटे के कुछ धरखन नइ रहिगे। दूसर फांक म खड़े दू झन नवा मास्टर छोकरा मन कहिन–ठउका नियाव ल कहत हे बिचारी हर।अइसने आदमी रहना चाही। बाह भाई ! धन्न हे ऐला,बड़े बड़े मेछर्रा मन के मुंह ल मारत हे।अइसने सफा कहवइय्या गांवन गांव हो जावँय तव राम राज आ जाही।अभी तो झाम राज चलत हे।

गांव म एक ले पूंजी पसरा अउ पढ़ाई लिखाइ म, बड़का आदमी हावै, फेर जंगो ल देखके सबो झन थोर न थोर झझकथें। कब काला का कहि देही कुछ भरोसा नइये ? थोर को अन्नेत देखिस सुनिस के हर्रस भर्रस कही देना हे। जंगो के मनखे हर, एकरे बर कई घौं ओला गारी गिल्ला मार पीट कर डारे हे। दुनिया के झंझट म तोला का परे रथे ? सब्बो ल सुधारे के तैं ठेका लेहे हस। अपन रस्दा म आना, अपन रस्दा मँ जाना चाही। गांव म कतको बनौकी बनाये बर पंडित, मास्टर, पंच सियनहा मन हावैं। तोला कतको चेताथौं फेर हरही गरुआ कस एक मुँह मारे बिन नइ रहस। ओरहन बद्दी अब आही तव खलरी ल उधाड़ दे हौ। जंगो भला कब, चुप रहितिस ? कहिस – मारे पीटे के का डर बतावत हावा ? कतको घौं तो थुथरे हावा हां ! महूं कहत हौं, मैं कुछू असत के कइहौं तव मोर मुंह म कीरा परही, अउ कोनों असत्ती मन लबारी मार के दोस लगाहीं तब उंकरो बंदरो बिनास होही। सब के देखइय्या भगवान हे। ओहर भर झन कउवावै, तिहां मोला कोई के चिटको डर नइये। कइहौं, कइहौं पचास घौं कइहौं। मारिहा तव

मार लेहा।

जंगो जइसे मुंहा के चर्रा बर्रा, तइसने जांगर के जबड़ कमइलिन रहय। दू झन के बूता ल एक्के झन सपेट डारय। गाड़ा भंइसा फांदे बर होय के खन्ती कुदारी, दौंरी। कहि तो देहेंव डउकन के मुंह ल बूता म मारै। बघनिन बरोबर, जे लंग ठाढ़ हो जाय ते मेर चटर लपर गोठ, बंद होइ जाना हे।

भगवान के लील्ला अपरंपार है। कब का होही कोन जानत रथे ? गांव म जेठ के खसलती अउ असाढ़ के लगती म धुंकी आ गइस। धुकी म आज गिरीन काल गइन। कोनो पारा नइ बांचिस जहां दू चार झन नइ मरिन होहीं। येई रई म भूखऊ हर घलाव धूंकी के धूंका म गुजरगे। संझउती एक दू घौं कोला कती गइस तीन चार धौं तरी उप्पर चलिस के बस। भुखऊ गय भगवान घर। होम धूप, अदना बदना, गुनियाई मतियाई, कुछू काम न इ परिस, दवाई ओखद कुच्छू काट नई करिस। अब का होही ? भुखउ तो सगा ले छूट हे। जब ले मनमतिया ल चूरी पहिराइस तब ले सगा मन ओकर चोंगी माखुर, खात खवाई, छठ्ठी बरही, मरनी, हरनी सब बन्द कर देहे हें। पंचहत्था भुखउ के लहॉस माढ़े हे अउ अकेल्ला मनमतिया कलप कलप के रोवत हे। नता गोता, सगा अतमा कतको हावैं फेर सगा बँधना के डर म, कोनी तीर म हिरकत नइहें, गली खोल म दू दी चरचर आदमी बइठे ठाढ़े गोठिआवत हें। जइसना जइसना मनखे तइसना ऊंकर गोठ बात। कोनो कथें – अब पनिकिन के मंजा हर दिखही। भुखऊ ल

जात ले कुजात करके ओकर गत गंगा ल बिगाड़ दिहिस। कोन उठाही लहांस ल ? ओकर भाई ददा मन काबर नइ आवत हें ? पहिली तो बहुंत मोहलो मोहलो करत रहिन। एक झन कहिस – हांथी हर मताथे तब अपन सोढ़ ल सम्हार थे ! इन तो अपन मसरमोटी म, कोनो ल कुछू नइ गमेरिन। कतको कोनो कुदेय उफरैंय फेर आखिर म भुंइयेच म गोड़ ल मढ़ाये बर परथे। दूसर कथे – तपथे तउन खपथे रे बाबू। इहें सरग अऊ नरक दूनों बने हे।

येती मनमतिया रोवत हे। ओती सुरुज नरायेन सरकत सरकत माथा उप्पर चढ़ के देखत हे। का होवत हे भुखऊ के ? आज भुखऊ तमासा हो गये है। ऐसी बस्ती वाला सगा अतमा तो देखतेच हें, भगवानो हर जाना माना ऊंकरे संग हो गये हे। कुच्छु समझत नइ बनत हे का होही ? कोन जानै ? का भुखऊ के मुरदा हर घरे म माढ़े माढ़े सर जाही ? अइसना तो कभू नई होये हे तव आजेच कइसे होही ?

खेत मा बूता करत करत जंगो हर भूखऊ के गुजरे के गोठ ल सुनिस। जंगो गरजगे अउ एक छिन म बरस गइस। पहिली तो मनमतिया ल गारी देइस फेर धर धर रो डारिस। खेत ले लकर–पकर लेवाई गरुआ कस, घरा–पछरा आइस अउ सोज्झ मनमतिया घर दंगर दंगर चल देइस। मनमतिया के मध्धिम रोवाई हर ये ला देखतेच म जोरहा होगे। तेल सोंखाये बाती म जाना कोन फेर तेल रितो देइस होय। बिना अधार के रांड़ी रुही ल जइसे धारन खूंटा मिल गइस। मनमतिया हर सगा नता

बस्ती बाला मन के रंग ढंग ल बताइस। जंगो हर जोरहा कहिस – मनमतिया लान बांस अउ सुमहा डोरी ल। मयाना बनके तैं मैं मरघट्टी लेजबो। अउ माटी ल देबो। जंगो के गोंठ ल बाहिर जुरे मनखे मन सुनिन तिहां इंदोहिल मात गइस। कहिन – ये का अंधेर होवत हे। डउकिन लहांस ल बोह के लेजहीं ? दुनिया ले अंधेर ? छिन भर मं गोठ हर पैरावट कस आगी, बस्ती भर म बगरगे। जतका किसम के मनखे ततका किसम के गोठ। खोर दुवारी म कोलबिल कइय्या गलबजार, खइमो खइमो आदमी। ऐही बीच जंगो के आदमी हर ठेंगा ले के आइस अउ ओला मार के डर बताके अपन घर चले बर कहिस। बस। फेर का पूछत हा ? जंगो के जीव म आगी तो भूंक दिहिस। बस। फेर का जुराव के बीच म मुंड़ ला ढ़ांकत, कछौरा छोरत दंगर दंगर आके बउछा तो गइस। कहिस– बड़का बड़का आदमी सियान सामरत जुरे हावा। कहूं संसार म सुने हावा, के मरे मुरदा हर माढ़े माढ़े कोनो के घर म रहिगे। एक गरीबिन ऊपर बिपत परे हे तब ओकर गइय्या गती करे बर, जमो जुर के ओकर तमासा देखत हावा। भगवान हर नता गोता, जात पांत पारा परोसी का येकरे बर बनाये हे के सबों के रहत म, ओकर मुरदा हर सर जावै ? महूं ला जात ले छोंड़ देहा फेर येकर गती ला बनाये बिना नई टरौ नई टरौं। का डउकी परानी मन ला, लहांस उठाये के साध लागत हे ? का होही, तै बन जाही ना ? जब गांवन गांव सोर उड़ही के फलाना गांव म डउकी परानी मन लहांस ल बोहिन। सबो के मेछा हर उंच्च हो जाही ? सहंराही। सब सुकुड़दुम चुप्प, सुनत रहिन, सिन्न परगे, चिट्ट पोट्ट नइ करत हें जमो के चऊ हर चबागे। गांव के

सिअनहा एक झन चोंगी पियत पियत खोंख डारिस अउ संसभरहा कहिस – सुन ओ गोठकहारिन। येकर गती ल हम सगा अतमा बना तो देबो, फेर खात खवाई के खरचा ल कोन समोखही ? येकर घर तो मुसवा डंड पेलत हे। सगा ल खवाये पिआये बिन उध्यार कइसे होही ? जरी गोठ ल मैं दू टप्पी बतावत हौं।

जंगो कहिस – जतका खात खवाई के खरचा लागही, पातर पनियर मैं हर पुरोहौं। मोर बहुंटा अउ तोड़ा हर नई बांच ही अउ का होही ? चला येकर गत गंगा ल बनावा। फेर का पूछत हा ? एक छिन म भुखऊ के सब काम हर होये लगिस। तड़ाक फड़ाक, मनमतिया के ललियाये आंखी कस बूड़ती सुरुज नरायेन के देखत देखत काठी माटी पर गइस।

भुखऊ के आज नहावन के खात खवाई के अतमयती होवत हे। हंउला हंउला भात दार चढ़त हे, उतरत हे। बरा सोंहारी बनत हे। जंगो हर जमो जिनिस के सखरोज करत हे के, कुछू बात के कमती झन होये पावै।

जंगो के गहना उतरगे, फेर मन हर चढ़े हे। आज निचट नव के गोठिआवत हे, बड़े बड़े मेछर्रा खा पी के निकल थे फेर जंगों सो, सौंहाये नइ सकत हें। खात खवाई होत होत आधा रात खसलगे। घर म अब कोनो नइये।

मनमतिया अउ जंगों, बांचे खोंचे रोटी पीठा, साग पान ल, सकेलत, भंड़वा ल एकजई करत थथल मथल निचट थकही मन कस होये, गये

गोठ ल गोठिआवत हें। के कउंवा के कांव कांव सुरु होये लागिस। येका छूते छुवत बेरा पहागे, पँग पँगा गे। पनिहारिन मन तरिया जाये बर निकरे लगिन

टिपिक टापक गरुवा बछरु निकले लागिस अउ छिन भर म कुकुर कउंवा बइला गरुवा के मारे डहर हर छेंकागे। भुखऊ के मरनी के दिनों तो येई गली में, येई किसम के कलबिल कइय्या म, डहर छेकाये रहिस। ओ दिन दू गोड़िया मन रहिन आज ये मन चरगोड़िया हें। ओमन खाये बर पाये खातिर अंड़ियाये रहिन, ये मन पाये हें तव खाये बर अंड़ियाये हें। उत्ती म सुरुज नरायेन लक लक लक लक करत उवत हे। ओ दिन भगवान हर इंकर गइय्या गती कराई ल, देखत रहिस आज सुग्घर असीस कस देवत हे। ये सब ला देख के जंगो हर हांस भरिस अउ थकही उठत उंत कहिस – जाथन दाई। अपनो घर के बूता ल करबो धरबो। ओकर ददा के फुहर पाती दू चार ठन गारी के बारी ल झोंकबो। मनमतिया के आंखी ले तर तर तर तर आंसू निकले लगिस। सुसकत सुसकत कहिस – तोरे अधार हे दीदी ! तोर छोंड़ अब मोर कोनो धरखन नइ ये। जइसने इंकर गती ल बनाये, तइसने मोरो बोझा हर तोरे उप्पर हे। जंगो कहिस – अंड़ही नइतो। चुप रौ, सबके बोहने बाला उदेनाथ भगवान, ओ दे देखत हावै। आदमी म का सामरथ हावै औ ? पानी भरे खाल के, बिन फोकट आदमी घमंड करथे। घमंड के घर खाली होथे ओ।

✧✧✧

63

चेरिया होइस रानी

जहां बेरा बुड़िस, चिरई चिरगुन रुख राई म जुरिया के चुंइचुंइ करिन, तिहा पारा परोस के लइकन मन, रमउतिन डोकरी के तिरे तिर आके बइठ जाथें। सियानिन ल किस्सा कहिनी कहेच बर परथे। पढ़े गुने नइ अय तभोले कतेक अकन किस्सा ल कइसे घोख डारे हे, सुनइया मन ल अचरित लागथे। सियानिन कहनी कहे लागिस – एक सहर म एक राजा रहय। ओकर एको ठन लइका बच्चा नइ होइस, तब गुनिया मतिया पूजा पाहुर जाप धियान कतेक कराइस। तव रानी के देव्ह हर गरु होइस। कहिन – भगवान हर चिन्हिस हे। लइका होइस तउनो नोनी। राजा अपन करम के फेर जान के का करय ? ओई नोनी ल बेटा कस पोंसिस। कतका मया करय झन पूछा ? संगे म खवावय पियावय, जहां जावै तिहां ले जावै, अहेर खेले जावय उहों ले जावय। खेलाई कुदाई खाना पीना छुछिन्द थोरकेच दिन म छोकरी, कोंहड़ा कस उलंड गे। एक दिन राजा हर अपन दुलौरिन बेटी ल लेके अहेर खेले बर, बन पहार कती कइस। किंजरत किंजरत खेदा म कुछू पाइन तो नऽही, फेर पियास के मारे तरुआ सुखागे। पानी खोज खोजत बिधुन रहेंय तव एक संतखंडा महल ल देखिन। महल के जमो कपाट फरिका उघरा रहय। भीतर जाके पेट भर पानी ल, बान बेटी ससन भर पिइन सुन्ना महल देख के दुनू बहिरियाये लगिन तब राजा के निकलतेच म कपाट हर खटाक ले देवागे। राजकुमारी भीतर रहिगे अउ राजा बाहिर होगे। कतको उजोग करिन फेर सब अबिरथा

होगे। राजकुमारी महल भीतरी, चारो मुड़ा घुमर के देखिस तव एक जगा राजा हर घयलाय परे हे, अऊ ओकर देंव्ह भर कांटेच कांटा होबाय हे। तिल धरे के ठउर नइहे। राजकुमारी हर सोग के मारे कांटा ल धीरे धीरे हेरे लागिस। अनाचकरित ओकर कान म आरो आइस कोनो चेरिया राख लेवा हो। झांकिस तव एक नायक हर अपन बेटी संग खड़े रहय। राजकुमारी अपने उम्मर के छोकरी ले देखके अपन ककनी के बल्दा में बिसा लिहिस। चेरिया धलाव कांटा हेरे लागिस। राजा हर चिटिक अकन कुसमुसाइस। राजकुमारी गुनिस – आंखी तिर के थोरक कांटा बांहचे हे, कहूं उठ जाही अउ पानी मांग ही तव काला देबो ? चेरिया ल चेता के राजकुमारी हर, पानी लेहे गइस। चेरिया हर आंखी तिर के कांटा ल हेरिस, के राजा हर ''राम राम'' कहत उठ बइठिस, राजा पुछिस – तै कौन अस ? चेरिया कहिस – मैं तुंहर रानी अंव, तुंहर देंव्ह के जमो कांटा ल मही हेरे हंव, ओतका म राजकुमारी हर पानी लेके आ गइस। राजा पुछिस – ये हर कोन अय ? चेरिया कहिस – मोर चेरिया अय, ऐला तुंहर बर पानी लेहे खातिर भेजे रहेंव। लेवा पानी पी लेवा राजकुमारी अकबकागे ये का होगे भगवान ? राजकुमारी चेरिया होगे अउ चेरिया होगे रानी। फेर गुनिस ले का होइस, सत्त हर, एक न एक दिन उघरबे करही। बादर म तोपाये सुरुज नरायेन जग जग ले दिखबे करथे। थोर थोर बेरा के तो बात रथे। राजकुमारी चेरिया के सब काम ल करय। ओला खाये बर देवैं तेला एक ठन गढ्डा म गाड़िया देवै। अंचरा पसार के मांगय तव देवता मन

रोज पांच ठन लडुवा गिरावंय ओहीं ल बिचारी खा पी लेवय।

एक दिन राजा परदेस जाये लगिस। रानी अउ चेरिया सो पुछिस – तुंहर मन बर का जिनिस लाहौं ? रानी तो कारी कारी पोत मंगाइस अऊ चेरिया हर सै दुलपुतरी लाने बर कहिस। बताइस रइगढ़ राज म मिलही। जब हल्ला होगे अऊ ऊंहा के राजा हर गम पाइस तव सैदुलपुतरी भेज दिहस। राजा के लाने पोत ल रानी पहिर लिस अउ चेरिया हर रात के सैदुलपुतरी के डब्बा ल उघार के कहिस – निकला रे मोर सैदुलपुतरी, मोरो करा श्रृंगार रे। ककनी के मैं चेरिया बिसायेंव चेरिया होगे रानी रे।

डब्बा ले सौ ठन दुलपुतरी बुलंग बुलंग निकलिन अउ पानी लाइन, नहवाइन, मुंड़ कोरिन पाटी पारिन, घर बहारिन अउ गोठिया बतरा के राजकुमारी ल भुलवारिन। भिनसरहा होत डब्बा म भर देवय। धीरे धीरे ये बात के गोठ होय लागिस। कइसे घर हर सफ्फा रते अउ होत अउ होत बिहनहा चेरिया हर नहाये खोरे पाटी पारे रथे। राजा के नाऊ हर एक दिन एक रात के ताकिस अउ जउन जउन देखिस तेला राजा ल एक एक ठन बता दिहिस। दूसर रात राजा हर लुकाके देखिस तव ओला पक्का भरोसा होगे के येहर चेरिया नोहय रानी आय।

होत बिहनिया राजा हर सँवागे चेरिया लंग आइस अउ जमो बात ल बताये बर कहिस। सुनके राजा हर महल म जाये बर, जोजियाइस। राजकुमारी कहिस मोला झन छुइहा, तूं तो नइकाइन हाथ के खाये पिये

हावा। पहिली पबरित होना परही। राजा कहिस – तहूं तो ओकर देहे ल खाये हस। राजकुमारी हर गड़ियाये भात साग ल देखा दिहिस। फेर कहिस मोला ले जाना होही तव पहिली ये नइकाइन जउन नकली रानी बने हय ऐला गड़हरा खनके गड़िया देवा, अउ ओकर उप्पर पथरा मढ़ाके नहडोरी करके पबरित होवा। राजा हर ओइसने सब करिस अउ फेर असली रानी ल सतखंडा महल म ले गइस। दूध के दूध के पानी होगे। सोन अउ पीतल के चिन्हारी मिल गै। सब झन खाइन पिइन राज करिन।

मोर किस्सा पूरगे।
सबके कान जुरगे॥

✦✦✦

67

मयारुक मनमतिया

बेरा बुड़ के तियार होइस। गरुआ बइला जहां बरदी ले लहूटिस सुआरी मन चुल्हवा चेताये म जहां भुलाइन, तहां मनमतिया बुढ़िया के तिरे तिर लइकन ठुलियाये लगथें। कोनो टूरी अपन छोटे भाई ला बोहके, ते कोनो अपन बहिनी ल भुलवारे बर पीठइय्या पाके चलिन, बुढ़िया दाई सो। ओती पेंड़ उपर चिराई चिरगुन के चुंय चुंय होथय तव ऐती मनमतिया डोकरी के चारों मुड़ा घेरके पारा बस्ती के टूरी टूरा मन, घूरी घंसाई घरउव्हन करे लगथें। आंय बुढ़ी दाई ! कत्था कह न ओ ! ये डोकरी दाई। ले मैं हुकारुं देवत हौं ओ ! अच्छा मँजा के काले कस हांसी के किस्सा सुनाबे। कइसे कोल्हिया ला डोर म बांध के सुंटिये सुंटिया सड़ासड़ संकर भगवान हर गोइंहा पिटान देइस। ह हा हा, अच्छा मंजा देइस। डूंडी रक्सीन के किस्सा ला झन कइबे, हमला डर लागथे। अपन अपन ले लइकनमन किस्सा के नांव अऊ अपन साध ल बतावत बतावत लोकलइय्यां लेहे लगिन। सियानिन हर लइकन मन के चिहुर पराई म कऊवा के कहय–भागा रांड़ी भड़ुआ हो। मैं नइ कहौं किस्सा ल तुंमन तो चिहुर कइसन पारत हावा। ये का मंतर मार दिस सियानिन हर, जमो चिहुर पराई एक चिटिक म बंद होगे। चुपचाप सुकुड़दुम होगइन लइकन मन। एक झन कहिस – हमन कोनो कुछू नई गोठियावन फेर तैं किस्सा तो कौह। जमो झन चुप रइहा रे भाई। ममा दाई ल कोनो झन असकटवा हा हांसी बोली कुटुम। सियानिन कहिस–बतावा काके किसा ला कहौं

? तैं अपन मन के कह बुढ़ी दाई। हमन कुछू नई बतावन तोर कहे सबेच किस्सा हर नीक लागथे। सियानिन हांस भरिस अउ कथे–अच्छा सुना। येहर किस्सा तो नो है फेर किस्सा कस ओ बात हर हय। मोर मइके के परोस के बात ये। हमर मइके के उत्ती कती फगुआ मंडल के घर रहय अउ बुड़ती कती बैसाखू के। फगुआ के सुआरी जबड़ काठी के पांच हाथ के डउकी, दलदपट, बड़का बेंवरा खीरा कस मिंडरी, पीढ़वा कस पीठ, माथा म सेन्दूर लगाये, गोठियावै तव, तिर तखार म गम मिल जतिस। निस्संसी, मस्त, खाना अउ पहिरना, दुइक दुआ रहँय। घर म चीज बस भरे बोजाये। कुछ जिनिस के कमी नही। गाय, भंइस, कमिया–धमिया, ढाबा ढोलगी, ओनहारी सियारी, गहना गोटान, सब कुछ। फेर एक चीज के कमती हे, कोरा म एको ठन लइका नइ ये। कतको डाक्टरी बइदाई, पूजा पाहुर, गुनिया मतिया, अदना बदना, उपास धात कर डारिन फेर का होगे भगवान ? नइ चिन्हीस। जमो जिनिस ल कोन खाही ? मरे म गत गंगा कोन करही ? डीह म दिया कोन बारही ? ये ही संसो हर मन ल दियाँर कस चरत रहय, कंचा लकड़ी कस आगी गुंगावत रथे। एक ठन लइका के बिन सब अंधियार हे। जमो जिनिस अबिरथा हे, कइसे करम फूट गये हे। भगवान मोर सब चीज बस ला ले लितिस फेर एक ठन कोख म लइका तो देतिस, हम बनी भूती करके, पेज पसिया पिया के ओला जिया लेतेन। फगुआ मन दुनू पराती रात के समे, लइका बच्चा के संसो म मन के दरद ल गोठियावैं बतावैं।

ये तो होइस उत्ती कती के घर बाला के हाल, अउ बुड़ती कती के बयसाखू के घर के बिरदंद हर निचट येकर उलटा रहय।

एक लइका टोंकिस–बयसाखू के घर हर उलटा कइसे रहिस ? का छान्ही हर भुइयां म उहां के रहइय्या मन मुंड के भार रेगँय बुलयं का बुढ़ी दाई ? लइका मन हांस दिहिन।

सियानिन जंगा के कथे–अंड़ही होवा। कुछु जाना न ताना, चुट्ट ले मार देथा। चुपे चाप सुनिहा तव सुना, नी तो भागा जावा। अच्छा ले ओ, तैं किस्सा ल कव्ह।

डोकरी कहिस बयसाघू घर लइकेच लइका छ: ठन नोनी और चार ठन बाबू। डेढ़वली ओकर सुआरी। एक ठन होके तियार होइस तहां दूसर पेट मं संचर जाथे। अउ घर म कमइया एके झन बैसाखू भर। बैसाखू कस घर के हर ओ करमा गीद ल गाइस होही .....

एक ठोम्हा चाउर तेमा चार झन खवइया,
तेया पहुना अवइया, मैं तो कइसे करौं रे,
मारा मन होथे कोईलारी जार्तेव रे।

गरीबी हर अलग गोर्रा मार के बइठे रहय। दू खांड़ी के खेत, एक ठन बइला, बीजहा भतहा बर धान खोजाउल पर जाय। ओनहा कपड़ा कभू तो सइघो सरोत्तर देंह म चढ़तिस ? चिथरा मइलहा चेंदरा। कइसनो

करके अपन मरजाद ल ढांके रहाय। एक लइका ल चुप करावत हे के दूसर के रोना राही, एक ल जुड़ सरदी तव दूसर ल जर चढ़े हे। कल्लई माते हे, कभू तो सरोत्तर पेट भर खाय बर पातिन, दुनू परानी ल नोहर हो गये रहय। भगवान हर येमन उपर अतेक छाहित होगे हे के ओकर दया के बोझा म लदा गये हें।

एक दिन बैयसाखू मन दुनू परानी रात के गोठिआवत रहंय। कस हो बाबू के ददा–मैं तो इन बच्चन के मारे मर गयेव हो। न तो खाये पिये पहिरे पावन, न एक छिन फुरसत रहे पावन। भगवान हर येकर ले मोला बकठी निरबंसी राखतिस तउन बने। तुंहर ओ परोसी मन कस, हमुं ला भगवान हर ये हल्लो कल्लो ले बहँचा देतिस तव हमुं निस्संसी रहतेन।

बुढ़िया कहिस – ये बड़ा बिटौना हे। बयसाखू घर ये बात दुख के हे, आधा कोरी लइकन के लंजावर म, जिये म कुछ सेवाद नइये, बकठी होये के साध मरत हे। ओती फगुआ ल चीज हर चाबत हे। बिन लइका बच्चा के खाये अन्न चाउर होवत हे। पूंजी पसरा हर अबिरधा लागत हे, भगवान सो बिनोथे के पेजपसिया पीतेंव फेर कोरा म लइका बच्चा के किलकारी सुनतेंव। दुनू ल दुख हे। दिल मां दांवा लगे हे । एक ला आधा कोरी लइका हर बोझा हो गये हे तव एक झन ला बिन लइका के कुछ नई ओरावत हे। एक लइका पूछिस – कस बुढ़ी दाई ? तुंहर परोस के उत्ती बुड़ती म जमो रोनही रोनहा मन रहिन। कोनो राजी खुसी से रहिइय्या नइ रहिन का ओ ? का तोर मइके घर ये ? एक परोसी के मुसवा कस लइके च लइका, तब

एक झन घर ठाठा परे रहय। टार भाई। हमन अइसन हा किस्सा ल नइ सुनन। डोकरी कहिस–बने घलाव रहिन रे! हमर घर के गंगाहू कती राम भरोस पंडित के घर रहय। ओकर घर दू ठन बाबू राम अउ लछिमन बरोबर, तीन चार बरिस के छोटे बड़े अच्छा सोग्गर मोंगर, गोरिया नरिया, कभू खटिया, नई धरँय। खेलत कूदत पारा भर मन ला मोहत रहँय। महराज घलाव सोझुवा, उदिद्म सहित राम गुन गावत, निसंसी रहय। ओकर सुआरी, देवी दाई बरोबर, कभू साग पान बर जाते तौ कभू ओकर मुंह ले नहीं नइ निकरय।

अमटहा साग रांधय तव बला के मोला देतिस। मयारुक, हांसत मुस्कियावत, रहय। कभू ओकर मुंह ले कोनो चारी निन्दा नइ सुने बर पायेन। गांव भर के मन कहंय, घर गोसाइन होवय तव महाराजिन कस होवय। देखनी होवय, बड़ाई होवय। रामभरोस महराज तउन, बड़ा नेम धरम बपाला रहय। ओकर जमो काम धरम करम म चलय। सियानिन के गोठ के चलत म ओकर नाती पतो हर खाये बर बलाये आइस, तब ये गोठ ल सुनके कथे–काय सास ? कहां के गोठ ला निकाले हावा ?

सियानिन कहिस – हमर मइके के गोठ ला बतावत रहेव ओ। तीन परोसी के तीन हाल ल लइका मन ला बतावत रहेंव। तहूं सुनके ये गोठ ल धर लेय। कहूं मछरी कस लइका छरकावे ता तहूं बयसाखू कस सुआरी, पीछू रोवत गावत भुगतत दिनल काटबे। सुन ओ बहुरिया। हमन के अब तो कय दिन के जिनगानी आज हावन तव काल भगवान हमला सकेल लिही

फेर मोर गोठ ला गँठिया के धर ले। नेम धरम ले रहिबै। जिनगानी ल सुधर मंजा के जीहा। केच्चो पेच्चो लइका होवा हा तव पीछू पसताहा। आज काल तो कमती लइका बच्चा रहय तेकर कई किसम के उजोग निकरे हें। तउन ल जान समझ लेबा। अपन दुल्हा ल डाक्टर सो, नरसबाई सो, भेज के दवाई पानी के उजोग ला। अउ कुछू करत नइ बनय तव डाक्टर ल दुल्हा बना लेहा तव ओ हर जमा रकम ढकम ल बता देही। बहुत मटक मटक तो करत रथा। बहुरिया हर हांस डारिस अउ कथे सियानिन। सियान हो गया फेर धियान हर नइ गये हे। रहा न तुंहर नाती ल बताहौ कइसे मसखरी करथा तेला। डाक्टर ला दुलहा बनाहौं तव तुंहर नाती के का हाल होही ?

चला भात खाये बर, जुड़ावत हे, चुरे पके बहुत बेरा हो गये है।

✧✧✧

पुस्तक समीक्षा

भोलवा भोलाराम बनिस
(छत्तीसगढ़ी कहानियों का संकलन)
लेखक – श्यामलाल चतुर्वेदी

प्रकाशक – भारतेन्दू साहित्य समिति, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

हिन्दी में लिखते पढ़ते रहने के कारण छत्तीसगढ़ी भाषा के गुणों की ओर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। ''घर का जोगी जोगड़ा, आन गांव का सिध्द'' ऐसी कहावत है। छत्तीसगढ़ी भाषा के साथ हमारा व्यवहार कुछ इसी प्रकार है। ''भोलवा भोलाराम बनिस'' कहानी संग्रह को पढ़ने से मेरे विश्वास को बल मिला कि छत्तीसगढ़ी तो साहित्य की भाषा है। उसमें श्रेष्ठ साहित्य की सृजन की पूरी क्षमता है। अभी तक इसे बोल–चाल की भाषा तक सीमित रखा गया है। जब साहित्य के सृजन के आवश्यकता समझी गई तो लेखन के लिये खड़ी बोली का आश्रय लिया गया। कारण चाहे जो भी हो, नुकसान तो छत्तीसगढ़ की पहचान का नुकसान है।

ऐसा नहीं है कि छत्तीसगढ़ में लिखा नही जा रहा है, लिखा जा रहा है। किन्तु 90 प्रतिशत लेखन काव्य के क्षेत्र में हो रहा है किन्तु जब तक गद्य के क्षेत्र में लेखन को महत्व नही दिया जायेगा, तब तक छत्तीसगढ़ी भाषा का

विकास एकांगी ही होगा। भाषा की कसौटी गद्य है उसकी अभिव्यक्ति क्षमता का पता गद्य लेखन में ही चलता है। प्रत्येक भाषा के अपने गुण होते हैं, संस्कार होते है, मुहावरे और तेवर होते हैं। उसकी अपनी बुनावट होती है। उसका अपना शब्द भंडार होता है इन सबके समुचित उपयोग के लिये विस्तृत फलक चाहिए। गद्य में ही वह विस्तार मिलता है श्री श्यामलाल चतुर्वेदी के कहानी संकलन ''भोलवा भोलाराम बनिस'' में इस अवधारणा की पुष्टि होती है।

चतुर्वेदी जी मूलत: कवि हैं। उनका व्यक्तित्व कृषि संस्कृति की गोद में पला और बढ़ा है। उनमें नागर संस्कृति की बनावट नही है। ग्राम्य जीवन की सरलता और सहजता है यही बात उनकी भाषा में भी है। छत्तीसगढ़ ग्राम्य भाषा है व कभी दरबारी या सरकारी भाषा नही रही। इसलिये उनमें कृत्रिमता और कुटिलता का अभाव है। व इतनी सरल और सहज भाषा है कि उसे सीखने के लिए हमारी बच्चों को किसी पाठशाला में जाने की जरुरत नही। दो करोड लोग इस भाषा को बोलते है फिर भी सरकार के पास इसके प्रचार-प्रसार के लिये बजट में दो पैसा नहीं होता। हमारे जनप्रतिनिधियों को भी छत्तीसगढ़ के वोटों की लहलहाती खेती से मतलब है, भाषा से नही किन्तु छत्तीसगढ़ के जो साहित्यकार है उन्हें तो छत्तीसगढ़ की माटी, संस्कृति, भाषा, साहित्य, कला इतिहास से मतलब है। उनके पास गर्व करने के लिये और है भी क्या ? चतुर्वेदी जी भी उन्ही में से एक हैं।

छत्तीसगढ़ी भाषा के प्रति उनकी गंभीरता और निष्ठा श्लाधनीय है। भाषा पर उनका अद्‌भुत अधिकार है। उनके मुंह से गांव की ठेठ भाषा सुनने का अपना ही सुख है। उनकी विशेषता यह है कि वे जैसा बोलते है वैसा लिखते भी है लिखते समय लेखक प्राय: कुछ अधिक चिंतित मुद्रा- अख्तियार कर लेते हैं कुछ असहज हो जाते हैं। चतुर्वेदी जी के साथ ऐसा नही होता। ''भोलवा भोलाराम बनिस'' में नौ कहानियां है सभी कहानियों में वे एक समान सहज और सरल लगते है जैसे गांव का जीवन होता है। अपने पात्रों के साथ उनकी कितनी आत्मीयता है यह इन कहानियों को पढ़ने से स्पष्ट हो जाती है।

संकलन की नौ कहानियों में से सात कहानियों की मुख्य पात्र महिलायें है 'बटोरन नहीं बहोरन चाही', तथा 'भोलवा भोलाराम बनिस' शीर्षक दो कहानियों के मुख्य पात्र पुरुष हैं पतिबरता के पांच लोटा पानी, सतवन्तीन सुकवारा, चोरिया होईस रानी – इन तीन कथाओं का कथ्य लोक कथाओं जैसा है। छोटे बाबू के बड़े बात, ''बटोरन नहीं बहोरन चाही'', ''भोलवा भोलाराम बनिस'', ''जंगो को जोमर्दी'' छत्तीसगढ़ के ग्राम्य जीवन और सामाजिक सरोकारो की कहानियां है ''रतनपुरहिन सियानिन'' में कहानी कम, रेखा चित्र अधिक है।

'जंगो की जोमर्दी' इस संकलन की श्रेष्ठ कहानी है जंगो गांव भर में अपने मुंहफट और निडर स्वभाव के लिये प्रसिध्द है जंगो के चरित्र को गढ़ने में लेखक ने अपना सारा कौशल लगा दिया है। जंगो के चरित्र को समझने

के लिये इस कहानी के कुछ अंशों को प्रस्तुत करना जरुरी समझता हूं। ''गांव मा एक ले एक पूंजी – पसरा अऊ पढ़ाई लिखई म बड़का आदमी हवै, फेर जंगो ल देख के सबोझन थोर न थोर झझकथे। कल काला का कही देही ? कुछ भरोसा नइये। थोरको अन्नेत ल देखिस–सुनिस के हर्रस–भर्रस कहि देना हे। जंगो जइसे मुंह के चर्रा–बर्रा, तइसने जांगर के जबड़ कमइलिन रहय। दूझन के बुता ल एक्के झन सपेट डारय। गाड़ा भैइसा फांदे बर होय के, खंती कुदारी, दौंरी कहि तो देंव डउकन के मुंह ल बुता म मारै। बघनिन–बरोबर जे लंग ठाढ़ हो जाए ते मेर चटर–मटर गोठ बन्द होई जाना हे। जंगो का यह रुप जितना कठोर और पथरिला है उसका उतना आंतरिक स्वरुप कोमलता और करुणा से भरपूर है यही उसकी जवां मर्दी की असली पहचान है। महामारी में मनमतिया का पति भुखऊ मर गया। भुखऊ ने मनमतिया को चुड़ी पहना कर घर में रख लिया था। मनमतिया दूसरी जाति की थी। अत: मनमतिया और भुखऊ के जातिवालों ने, उन्हें अपनी अपनी जाति से बहिष्कृत कर दिया था। भुखऊ की लाश पड़ी थई। जाति दण्ड के भय से कोई उसकी लाश उठाने का साहस नहीं कर रहा जंगो को जब यह समाचार मिला तब वह खेत में काम कर रही थी। वह मनमतिया के घर की ओर चल पड़ी घर के आसपास लोग जमा थे – लाश उठाने के लिये नहीं, तमाशा देखने के लिये। लेखक के शब्दों में – ''जंगो खेत ले लकर पकर लेवई गरुवा कस, धरा–पछरा कस आइस अउ सोज्झ मनमतिया घर दंगर–दंगर चल देइस। मनमतिया हर सगा – नता बस्ती वाला मन के रंग–ढंग ला बताइस।

जंगो हर जोरहा कहिस – मनमतिया लान बांस अउ सुमहा डोरी ल। मयाना बना के तैं मैं मरघट्टी ले जाबो अउ माटी ल देबो।'' जंगो के गोठ ल बाहिर जुरे मनखे मन सुनिन तिहां इन्दोहिल मात गइस। कहिन ''ये का अंधेर होवत हे ? डउकिन लहॉस ल बोह के लेजहीं ? दुनिया ले अंधेर।'' छिन भर म गोठ हर पैरांवट कस आगी बस्ती भर म बगर गे। खोल-दुवारी म कोलबिल-कइया, गलबजार, खसमो-खइमो आदमी। एही बीच जंगो के अदमी हर ठेंगा ले के आइस अउ ओला मार के डर बता के घर चले बर कहिस। बस, फेर का पूछत हौ, जंगो के जीव मा आगी तो फूंक दिहिस, जम्मो जुराव के बीच म मूड़ ल ढांकत कछोरा छोरत दंगर-दंगर आ के बउछा तो गइस। कहिस – ''बड़का बड़का सियान सामरत जुरे हावा कहूं संसार मं सुने हावा, के मरे मुरदा हर माढ़े माढ़े कोनो के घर म रहिगे ? एक गरीबिन उपर बिपत पड़े हे तब ओकर गइय्या गति जम्मो जुर के तमासा देखत हावा। भगवान हर नता गोता, जात पांत, पारा-परोसी येकरे बर बनाये हे, के सबो के रहत म ओकर मुरदा हर सर जावै ? महू ला जात ले छोड़ देहा फेर येकर गति ला बनाये बिना टरौं नइ टरौं। का डउकी परानी ल कहॉस उठाये के साध लागथे ? जब गांवन-गांव सोर उड़ही के फलाना गांव म डउकी-परानी मन लहॉस ल बोहिन, तब सबों के मेछा हर उंच्च हो जाही, संहराहीं।''

जंगो की जवामर्दी यहीं तो दिखाई देती है जब वह जातिगत रुढ़ियों और रुढ़िगत कट्टरता के खिलाफ कछोरा बांध लेती है, मानवीय संवेदनाओं को कुंठित करने वाली मूंछो को चुनौती देती है, अन्याय और अत्याचार

से टक्कर लेती है। गरीब और असहाय का पक्ष लेकर पूरे समाज से टकरा जाने वाली, गांव में यदि एक जंगो भी निकल आये तो पर्याप्त है। **छत्तीसगढ़ कथा साहित्य में जंगो एक अमर चरित्र है।**

नारी पात्रों के चरित्र-चित्रण में चतुर्वेदी जी को महारत हासिल है। छत्तीसगढ़ की ग्राम्या के प्रति चतुर्वेदी जी ने एक सात्विक दृष्टिकोण विकसित किया है। छत्तीसगढ़ की नारी के वास्तविक चरित्र का दर्शन करना हो तो इन कहानियों के भीतर प्रवेश कीजिए। ग्रामीण समाज में ऐसी नारियों का गरिमापूर्ण अस्तित्व आज भी है।

''बटोरन नहीं, बहोरन चाही'' कहानी जन-प्रतिनिधियों के लिये दिशा बोधक है। ग्राम पंचायतों के माध्यम से ग्राम-स्वराज्य के लक्ष्य को प्राप्त करना है। लोभ और लाभ, शोषण और प्रदूषण की नींव पर विकसित हो रही औद्योगिक संस्कृति कृषि संस्कृति की रक्षा करनी है। हिंसा और अश्लीलता से भरे दृश्य-माध्यमों तथा दारू की बाढ़ के प्रकोप से सांस्कृतिक तथा सामाजिक संरचना को टूटने बिखरने से बचाना है।

''रतनपुरहिन सियानिन'' एक मयारुक वृध्द महिला का चरित्र है। संध्या होते ही बच्चे उन्हें घेर कर बैठ जाते हैं और कहानी-सुनाने का आग्रह करते हैं। सियानीन का सानिध्य इन बच्चों के लिये पाठशाला है। कहानी के माध्यम से शिक्षाप्रद पाठ बच्चे यहीं सीखतें है।

''छोटे बाबू के बड़े बात'' कहानी में इसी कथ्य को अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया गया है। छोटे बाबू की माँ ने जो शिक्षा उसे बचपन में दी उसी का परिणाम था कि छोटे बाबू ने सामाजिक स्तर पर व्याप्त भेदभाव, अलगाव-दुराव, अनीतिं-कुरीति के विरुध्द संघर्ष किया माता से बढ़कर कोई गुरु नहीं होता।

चतुर्वेदी जी के पास संपन्न और सुरुचि पूर्ण भाषा है। उसमें ठेठ ग्रामीण लहजा, सहजता और सरलता है। मुहावेदार भाषा के वे धनी है। भाषा की दुनिया में मुहावरे बड़े कीमती होते हैं। बोल-चाल में ये मुहावरे सैकड़ों वर्षो से प्रचलित है। साहित्य में जब इनका उपयोग होता है तो भाषा खिल उठती है - गारी कान के बारी, कान के कीरा झर्राना, बिन नाथ के बइला, न बन जाये बर, न बाघ धरे बर, राम के चिरई, राम के खेत, खाले चिरय्या भर-भर पेट, तइहा के बात ल बइहा ले गे, आन ल सिखौना देय, अपन बइठ खनिया लेय, तपिहा त खपिहा, खाई मीठ की माई मीठ, करही ते भरही, बड़े बड़े गइन खमरछट आइन, हाथी बूलै गांवन-गांव जेकर हाथी तेकर नाव, थूंके थूंके म लड़ुवा बांधना, धन दोगानी-ओरिया के छांव, हंड़िया के मुंह म परई देय, आदमी के मुंह म का देहा ? दूध के न पूत के अड़हा बर डॅड़ हे, डॅड़हा आदि मुहावरे भाषा को अधिक अर्थवान और कथन अधिक प्राणवान बनाते हैं।

मुंशी प्रेमचंद के पश्चात् हिन्दी कथा साहित्य से गांव लगभग गायब हो गये। छत्तीसगढ़ी कथा साहित्य के केन्द्र में गांव आज भी स्थित है, यह हमारा

सौभाग्य है। चतुर्वेदी जी का यह कहानी संकलन इस तथ्य की पुष्टि करता है। गांव के लोगों के साथ आज भी कहीं-कहीं ऐसा व्यवहार होता है जैसे वे द्वितीय श्रेणी के नागरिक हों। आज जब धान का कटोरा सीमेन्ट का बोरा बनने के संक्रमण काल से गुजर रहा है, गांव की गरिमा की रक्षा हमारी चिन्ता का मुख्य विषय है। इस संकलन की कहानियों में छत्तीसगढ़ के गांव की गरिमा को बड़ी सहजता के साथ उजागर किया गया है।

प्रो. रामनारायण शुक्ल का प्रकाशकीय वक्तव्य तथा डा. पालेश्वर शर्मा की भूमिका महत्वपूर्ण है।

हरि ठाकुर
रायपुर (छ.ग.)



श्यामलाल चतुर्वेदी

जन्म स्थान – कोटमी, तह. जांजगीर, जिला बिलासपुर

जन्मतिथि – फाल्गुन शुल्क अष्टमी, संवत 1982, तारीख 2 फरवरी 1926

शिक्षा – आठ वर्ष की अवस्था में चौथी पास, शाला में सर्वप्रथम रहे आगे अवरुध्द

– प्राइव्हेट, पांचवी सन् 1941 में, अकलतारा मिडिल स्कूल में पांचवी कक्षा के सभी छात्रों से अधिक अंक प्राप्त

– प्राइव्हेट बनारस से 1956 में मेट्रिक पास, संगीत विषय में प्रावीण्य

– प्राइव्हेट 1968 में बी.ए. और 1976 में एम.ए. । संयोग समझिये कि एम. ए. के स्वेच्छिक विषय छत्तीसगढ के पाठ्यक्रम में इनकी कविताएं संकलित थी। परीक्षार्थी के रुप में इन्हें अपनी कविता पर उत्तर लिखने का मौका मिला था।

सन् 1941 – से हिन्दी कविता लिखना प्रारंभ।

1949 – में नागपुर रेडियो से छत्तीसगढी कविता का प्रसारण, संभवतया पं. द्वारिकाप्रसाद तिवारी (विप्र) जी के बाद दूसरे छत्तीसगढी कवि थे जिनका प्रसारण तब हुआ। वाद में भोपाल और रायपुर, बिलासपुर आकाशवाणी से प्रसारण होते रहा है। दूरदर्शन रायपुर भोपाल से काव्य पाठ तथा दिल्ली से कहानी कथन।

सन् 1948 – से पत्रकारिता में प्रवेश – सर्वप्रथम कर्मवीर, महाकौशल साप्ताहिक के बाद तो पांच दैनिक पत्रों का कुछ समय तक प्रतिनिधि रहा जिसमें नागपुर के नवभारत, लोकमत, युगधर्म के स्थानीय एवं नवभारत टाइम्स कलकत्ता और जनसत्ता दिल्ली के जिला प्रतिनिधि थे। तब 1955 तक मात्र प्रायमरी पास थे। सन् 52 से हिन्दुस्थान समाचार समिति के जिला प्रतिनिधि।

संप्रति – दैनिक नई दुनिया भोपाल के प्रतिनिधि।